(घ) परशुराम और लक्ष्मण के क्रोध में से आप किसे उचित मानते हैं और क्यों ?

(ङ) संगतकार किस प्रकार के लोगों का प्रतिनिधि है ?

अथवा

लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों? मैं क्यों लिखता हूँ पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए :

(क) प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है ? साना साना हाथ जोड़ि पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए ।

(ख) ऐंही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा । पाठ के आधार पर बताइए कि भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में दुलारी और टुन्नू में अपना योगदान किस प्रकार दिया ?

(ग) हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है ?

(घ) साना साना हाथ जोड़ि पाठ में गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर क्यों कहा गया है?

खण्ड-(घ)

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर दिए गए विचार बिन्दुओं के आधार पर 200-250 शब्दों में निबन्ध लिखिए।

(क) समाचार पत्र का महत्व–समाचार पत्र एक सामाजिक कड़ी, लोकतंत्र का प्रहरी, प्रचार का सशक्त माध्यम, व्यापार को फैलाव, ज्ञान वृद्धि का साधन, मनोरंजन का साधन, जन सुविधा?।

(ख) विज्ञापन–विज्ञापन का उद्देश्य, विज्ञापन के विविध प्रकार, निर्णय को प्रभावित करने में विज्ञापनों की भूमिका, भ्रामक विज्ञापन और उन पर रोक, विज्ञापनों का सामाजिक दायित्व, निष्कर्ष ।

(ग) पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं–स्वाधीनता और पराधीनता में अंतर, स्वाधीनता आत्मसम्मान की पोषक, पराधीनता में निराशा कुंठा की वृद्धि, पराधीनता एक अभिशाप, स्वाधीनता को बनाए रखने की आवश्यकता, उपाय।

17. आपके मित्र ने तुम्हारे घर शादी में आकर खूब काम कराया–इसके प्रति कृतज्ञता प्रकअ करते हुए मित्र को पत्र लिखिए ।

अथवा

नित्य प्रात:काल उठकर खुली हवा में घूमने और व्यायाम करने की सलाह देते हुए अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखिए ।

जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया ।

प्रभुता का शरण बिंब केवल मृगतृष्णा है

हर चन्द्रिका में छिपी एक रात कृष्ण है ।

जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन

छाया मत भूलना ।

मन होगा दुख दूना

(क) प्रभूता का शरण-बिंब रात कृष्णा है–पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ।

(ख) कठिन यथार्थ को पूजने से कवि का क्या अभिप्राय है ?

(ग) कवि ने 'छाया' को छूने के लिए क्यों मना किया है ?

अथवा

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में

खो चुका होता है

या अपने ही सरगम को लाँघकर

चला जाता हे भटकता हुआ एक अनहद में

तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है

जेसे समटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान

जैसे उसे याद दिलाता है उसका बचपन

जब वह नौसिखिया था

(क) अंतरे की जटिल तानों का जंगल किसे कहा गया है ?

(ख) सरगम को लाँघने का क्या तात्पर्य है ?

(ग) अनहद का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(घ) संगतकार मुख्य गायक को सही स्थिति में कैसे लाता है ?

(ङ) संगतकार का किस प्रकार सहयोग करता है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) राम परशुराम लक्ष्मण संवाद के आधार पर संक्षेप में लिखिए कि क्रोधपूर्ण बातें सुनकर लक्ष्मण ने उन्हें शूरवीर की क्या पहचान बताई ?

(ख) छाया शब्द यहाँ किस सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है ? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है ?

(ग) माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी ? कन्यादान कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आये सो कीजिए, पर परमेश्वर के लिए यह न कहिए कि स्वयं पढ़ने लिखने में कोई दोष है, वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह सुख का नाश करनेवाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है ।

1. मिथ्या का आशय है :

(क) पूरी तरह सच (ख) आंशिक सत्य

(ग) पूरी तरह झूठ (घ) आंशिक

2. कौन सी बात सोलहों आने मिथ्या है ?

(क) स्त्री-शिक्षा का विचार (ख) स्त्री-शिक्षा का विचार दोषपूर्ण है

(ग) स्त्री-शिक्षा का विरोध (घ) स्त्री-शिक्षा का विचार निर्दोष है

3. लेखक के अनुसार लड़कों की शिक्षा प्रणाली :

(क) अच्छी है (ख) बुरी है

(ग) सुधार योग्य है (घ) बंद करने योग्य है

4. लेखक के अनुसार सारे स्कूल कॉलेज :

(क) बंद कर देना चाहिए (ख) सुधार कर खोले जाएँ

(ग) बंद नहीं करना चाहिए (घ) लड़कियों के लिए होना चाहिए

5. लेखक स्त्री-शिक्षा का.....है। वाक्य पूरा कीजिए ।

(क) पक्षधर (ख) विरोधी

(ग) आंशिक (घ) कट्टर समर्थक

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए ।

(क) आशय स्पष्ट कीजिए–फटा सुर न बख्शें । लुंगिया का क्या है, आज फट है, तो कल सी जाएगी।

(ख) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे ?

(ग) कहावर प्रसाद द्विवेदी का निबन्ध उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है कैसे ?

(घ) वह कौन सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाय और न अपने कानों पर ?

(ङ) फादर की उपस्थिति देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?

11. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यश हे या वैभव है, मान है न सरमाया

भाग्यविधाता लेनिन अपनी डैरक में रखे डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आखिर ऐसा क्यों करता था ? संसार के मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया। और इन सबसे बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती कटती मानवता सुख से रह सके ।

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

(क) संस्कृति (ख) बालगोबिन भगत

(ग) नौबतखाने में इबादत (घ) लखनवी अंदाज

2. मानव संस्कृति के माता-पिता हैं :

(क) सभ्यता और संस्कृति (ख) भौतिक प्रेरणा और ज्ञानप्सा

(ग) मानव सभ्यता (घ) मानव और संस्कृति

3. रूस का भाग्य विधाता था :

(क) स्टालिन (ख) बिस्मार्क

(ग) लेनिन (घ) मुसोलिनी

4. न्यूटन ने आविष्कार किया :

(क) गुरुत्वाकर्षण (ख) टेलीविजन का

(ग) रेडियो (घ) इंटरनेट का

5. मजदूरों को सुखी देखने के लिए किसने अपना जीवन दु:ख में बिता दिया ?

(क) कार्ल मार्क्स ने (ख) गोपालन रेड्डी ने

(ग) स्टालिन ने (घ) लेनिन ने

अथवा

'शिक्षा बहुत व्याक शब्द है । उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है। पढ़ना लिखना भी उसी के अन्तर्गत है। इस देश की वर्तमान प्रणाली अच्छीनहीं है। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे इस प्रणाली में संशोधन करना या कराना चाहिए खुद पढ़ने-लिखने का दोष न देना चाहिए । लड़कों की ही शिक्षा प्रणाली कौन सी बड़ी अच्छी है ।

प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली का संशोधन कीजिएं उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देना चाहिए–घर में या स्कूलों में।

प्र. 5. रेखांकित का पद-परिचय दीजिए :

1. मनोहर दसवीं कक्षा में पढ़ता है ।
2. वह किसे देख रहा है ?
3. कितने सुगन्धित पुष्प हैं !
4. मैं धीरे-धीरे चलती हूँ ।
5. वाह ! कैसे सुन्दर फूल हैं ।

प्र. 6. 1. रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए :

(क) संबंध तोड़ने में एक मिनट लगता है किन्तु बनाने में उम्र लगती है ।

(ख) यहाँ एक छोटा-सा गाँव था, जिसके चारों ओर समुद्र था ।

(ग) आकाश में उड़ते हुए बाज ने चिड़िया पकड़ी ।

2. रेखांकित उपवाक्य का भेद बताइए :

(क) उसने कहा कि मैं शादी पर अवश्य जाऊँगा ।

(ख) मैंने उसे ऐसी कहानी सुनाई कि वह रो पड़ी ।

7. 1. कर्तृवाच्य बनाइए–हलवाई द्वारा मिठाइयाँ बनाई गई ।
2. निम्नलिखित वाक्य से कर्मवाच्य बनाइए–अशोक पुस्तक पढ़ता है ।
3. भाववाच्य में बदलिए–उमेश हँसा ।
4. मुझसे उठा नहीं गया–वाच्य का प्रकार बताइए ।
5. मैं दसवीं में पढ़ता हूँ–वाच्य का प्रकार बताइए ।

प्र. 8. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित अलंकार का भेद लिखिए ।

(क) खिले हजारों चाँद तुम्हारे नयनों के आकाश में

(ख) हाय फूल सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी ।

(ग) विमल वाणी ने वीणा ली ।

(घ) कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी ।

2. जहाँ वर्णों की आवृति के कारण नाद सौन्दर्य उत्पन्न होता है, वहाँ कौन सा अलंकार होता है ?

9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए :

भौतिक प्रेरणा, ज्ञानेप्सा क्या ये दो ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं ? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है ? सुनते हैं कि रूस का

प्र. 4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के सही विकल्प छाँटकर लिखिए ।

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं ।
रह भरोसे भाग्य के दु:ख भाग पछताते नहीं ।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं ।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं ।
हो गई एक आन में उनके बुरे दिन भी भले ।
सब जगे सब काल में वहे ही मिले फूले फले ।
काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते ।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुँह मोड़ते ।
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहीं तोड़ते ।
सम्पदा मन से करोड़ों के नहीं जो जोड़ते ।
बन गया हीर उन्हीं के हाथ से कार्बन
कांच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन ।

1. कैसा व्यक्ति असफल होकर दु:ख भोगता है ?
   (क) विघ्न से घबराने वाले (ख) साहसी व्यक्ति
   (ग) वीरता से सामना करने वाले (घ) इनमें से कोई नहीं
2. किन व्यक्तियों के बुरे दिन भी भले दिन बन जाते हैं
   (क) कायर (ख) निडर
   (ग) वीर (घ) कर्मठ व्यक्ति
3. किन लोगों के हाथों में काँच उज्ज्वल रत्न बन जाता है ?
   (क) कर्मठ व्यक्ति (ख) निकम्मे लोगों के हाथ
   (ग) सौदागर (घ) कर्मठ
4. गगन के फूल बातों से तोड़ना का आशय स्पष्ट कीजिए ।
   (क) बिना परिश्रम किए (ख) कठिन परिश्रम से
   (ग) सपनों में बात करने से (घ) इनमें से कोई नहीं
5. पद्यांश का उचित शीर्ष दीजिए :
   (क) कर्मठ व्यक्ति (ख) निडर व्यक्ति
   (ग) साहसी व्यक्ति (घ) उपर्युक्त सभी

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए :

गहराई को कौन पूछता
गहरा तो है कूप भी,
पर न पहुँचता वहाँ समीरन
नहीं पहुँचती धूप भी ।
जीत उसी की जो लहरों का देता रहता साथ है ।
बादल का क्या दोष
फोड़ यदि सका न यह चट्टान तू
पानी तो पानी है, मतकर
यों अपना अपमान तू ।
कल्प7कल्प का धैर्य जुटे जब, बनता तभी प्रपात है ।
सह ले पगले ! चुप हो सहले, आया तो आघात है ।

1. कवि के अनुसार इस संसार में गहराई को महत्व नहीं दिया जाता ?
   (क) गतिशीलता के कारण (ख) चंचलता के कारण
   (ग) स्थिरता के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं
2. इस संसार में विलय किसकी होती है ?
   (क) कायर की (ख) कभी न बदलने वाले की
   (ग) परिस्थितियों के अनुसार बदलने वाले की (घ) इनमें से कोई नहीं
3. गहरे कुएँ में क्या नहीं पहुँचता ?
   (क) सूर्य की किरणें (ख) (क) और (ग) दोनों
   (ग) हवा (घ) पानी
4. कवि ने क्या करने का परामर्श दिया है ?
   (क) सभी आघात सह लेने का (ख) चुप रहने का
   (ग) विरोध करने का (घ) क्रान्ति करने का
5. पद्यांश में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है ?
   (क) प्रश्न (ख) पुनरुक्ति
   (ग) अनुप्रास (घ) उपर्युक्त सभी

भी उन्हें स्वीकार कर ही लेगा ? कानून उन्हीं का साथ देगा न कि धन बल से कानून की धज्जियाँ उड़ाने में समर्थ लोगों का ? हमारे विचार में पुरानी पीढ़ी के दकियानूसी लोग किसी भी बात से डरने या पसीजने वाले नहीं, फिरसभी युवक युवतियों को पेंम संबंध ओर इस प्रकार के विवाह के लिए वातावरण ही सुलभ संभव नहीं । ऐसी स्थिति में मात्र एक उपाय ी इस सर्वभक्षी दहेज की कुप्रथा के विरुद्ध कारगर हो सकता है ओर वह है युवकों का विद्रोह ! युवक युवतियाँ दोनों ऐसे ही परिवारों में विवाह करने से स्पष्ट और आंतरिक दृढ़ता से इंकार कर दें, जहाँ किसी भी रूप में दहेज लिया दिया जाता हो। युवतियों से भी बढ़कर देश के जागरूक नवयुवकों पर अधिक दायित्व जाता है। जिस दिन युवक अपने माता-पिता से स्पष्ट कह देंगे कि वह दहेज लेकर कतई विवाह नहीं करेंगे, उसी दिन समस्त दहेज लोभियों की अक्ल ठिकाने लग जाएगी और पिुर इस कुप्रथा का अन्त हा जाएगा ।

1. उपयुक्त गद्यांश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा ?

   (क) युवक का विद्रोह (ख) दहेज प्रथा एक अभिशाप है

   (ग) प्रेम विवाह (घ) दहेज प्रथा के लिए कानून की आवश्यकता

2. अनेक उपाय किए जाने पर भी दहेज की कुप्रथा फल फूल रही है, क्योंकि :

   (क) प्रभावी कानून की कमी है (ख) समाज में प्रेम विवाह कम होते हैं

   (ग) अंतर्जातीय विवाह अधिक हो रहे हैं (घ) लोगों का दृष्टिकोण नहीं बदल रहा है

3. अत्यन्त कठोर कानून भी दहेज प्रथा को समाप्त करने की गारंटी नहीं है । क्योंकि :

   (क) कठोर कानून लोगों में भय व्याप्त करता है (ख) कठोर कानून प्रभावी नहीं होते

   (ग) कानून धनी लोगों के हित में पक्षपाती हो जाता है

(घ) कानून की जानकारी सबको नहीं होती

4. दहेज के सर्वभक्षी हो जाने का क्या कारण है ?

   (क) पाश्चात्य संस्कृति (ख) लोभी मानसिकता

   (ग) यश लिप्सा (घ) आधुनिक विचारधारा

5. दहेज प्रथा के अंत का सर्वप्रभावी उपाय क्या है ?

   (क) प्रेम विवाह को प्रोत्साहित करना

   (ख) युवाओं द्वारा इसे सीमित रूप में स्वीकार करना

   (ग) युवाओं द्वारा दहेज के खिलाफ विद्रोह करना

   (घ) युवाओं द्वारा कभी भी विवाह न करना

को रास्तों से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है । बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया है। अब गर्मी में ज्यादा गर्मी, बेवक्त की बरसातें जलजले, सैलाब, तूफान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम हैं ।

1. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए ।

(क) दुनिया की यात्रा (ख) प्राकृतिक असंतुलन और मानव

(ग) बारूदी विनाशीला (घ) कोई भी विकल्प सही नहीं है

2. प्रकृति के असंतुलन का सबसे प्रमुख कारण क्या है ?

(क) पक्षियों का बस्तियों से भागना (ख) बारूद की विनाशलीला

(ग) बढ़ती जनसंख्या (घ) बढ़ता प्रदूषण

3. जलजले के लिए संस्कृतनिष्ठ शब्द कौन-सा है ?

(क) भूकम्प (ख) तूफान

(ग) बाढ़ (घ) महाविनाश

3. पहले की दुनिया ओर आज की दुनिया में लेखक को क्या अंतर दिखाई देता है ?

(क) अब मनुष्य अधि स्वतंत्र है (ख) अब मनुष्य बँटकर छोटे-छोटे घरों में रहने लगा है

(ग) अब मनुष्य अधिक विकसित है (घ) अब मनुष्य अधि सक्षम है

5. प्रकृति के असंतुलन का क्या परिणाम हुआ है ?

(क) आबादी बेतहाशा बढ़ रही है (ख) समुद्र सिमट रहा है

(ग) विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और रोगों में वृद्धि

(घ) सभी विकल्प सही हैं

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

सारा समाज दहे की कुप्रथा से पीड़ित है, चिन्तित है और इससे छुटकारा चाहता है। कानून भी बनते सामाजिक दबाव भी है। फिर भी यह प्रथा फलती-फूलती जा रही है, समाप्त नहीं हो पा रही है। क्यों? आखिर क्या उपाय है, इस अभिशाप से मुक्त होने का, कोई इसका उपाय अंतर्जातीय विवाह को बढ़ावा देने को बताता है, तो कोई प्रेम विवाह की चर्चा करता है और कोई दंडात्मक कठोर कानून बनाने का। ये सभी बातें एक सीमा तक ही ठीक है। क्या गारंटी है कि अंतर्जातीय तथा प्रेम विवाह के लिए तैयार होने वालों के दहेज लोभी माँ बाप उस स्थिति में भी दहेज संबंधी सौदेबाजी नहीं करेंगे ? फिर समाज

शिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र'

1. 'ऐहि ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा ! पाठ का नाट्य रूपान्तरण प्रस्तुत कीजिए ।
2. गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की सूची तैयार कीजिए एवं उनके योगदान को रेखांकित कीजिए ।
3. प्रस्तुत पाठ में आए रोचक संवादों को चार्ट पर प्रस्तुत कीजिए ।
4. व्यक्तिगत प्रेम से बढ़कर देशप्रेम की भावना है। इस विषय पर अनुच्छेद लिखिए ।

अज्ञेय (मैं, क्यों लिखता हूँ ?)

1. अज्ञेय परमाणु शक्ति का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस-किस तरह से हो रहा है ? एक अनुच्छेद लिखिए ।
2. हिरोशिमा की घटना पर आधारित एक कहानी बनाइए।
3. जापान में आई प्राकृतिक आपदा के विषय में अपने अखबारों/टी.वी. चैनलों में जो पढ़ा, देखा हो उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

व्याकरण-खण्ड

पद परिचय — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण के दस-दस उदाहरण लिखिए ।

वाक्य भेद (रचना के अनुसार) — सरल मिश्र एवं संयुक्त वाक्यों का उल्लेख करते हुए सारणी बनाइए, प्रत्येक स्तम्भ में पाँच उदाहरण हों।

वाच्य परिवर्तन — कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के 5-5 उदाहरण एकत्र कर चार्ट पर प्रस्तु कीजिए।

खण्ड-(क)

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

दुनिया कैसे बजूद में आई ? पहले क्या थी ? किस बिन्दु से इसकी यात्रा शुरू हुई ? इन प्रश्नों का उत्तर विज्ञान अपनी तरह से देता है, धार्मिक ग्रन्थ अपनी-अपनी तरह से । संसार की रचना भले ही कैसे हुई हो, लेकिन धरती किसी एक की नहीं है। पंछी, मानव, पशु, नदी, पव्रत, समंदर इत्यादि सभी की इसमें बराबर की हिस्सेदारी है। यह और बात है कि इस हिस्सेदारी में नाव जाति ने अपनी बुद्धि से बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी है। पहले पूरा संसार एक परिवार के समान था, अब टुकड़ों में बंटकर एक-दूसरे से दूर हो चुका है। पहले बड़े-बड़े दालानों आँगनों में सब मिलजुलकर रहते थे, अब छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में जीवन सिमटने लगा है। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है, पेड़ों

क्षितिज (गद्य खंड)

मन्नु भंडारी

1. आजकल महानगरों में रहने वाले लोग प्राय: पड़ोस कल्चर से वंचित रह जाते हैं। विषय पर एक लघु नाटिका बनाइए ।
2. वन संरक्षण विभिन्न व्यसनों के निषेध हेतु अभियान के लिए 10 नारे तैयार कीजिए ।
3. तारीफ सुनना सबको अच्छा लगता है । कभी न कभी किसी ने आपकी तारीफ की होगी। तारीफ सुनने पर आपको कैसा महसूस हुआ ? अपने शब्दों में लिखिए ।

महावीर प्रसाद द्विवेदी
(स्त्री विरोधी के विरोधी
कुतर्कों का खंडन)

1. स्त्री शिक्षा पर एक पोस्टर तैयार कीजिए ।
2. आपने जनगणना 2011 के आंकड़ों पर ध्यान दिया होगा। इस बार भी प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या बहुत कम जाई गई है। इससे समाज की लड़कों को महत्व देने की प्रवृति का आभास मिलता है। लिंग-भेद की इस समस्या को दूर करने के लिए आप क्या करेंगे ?
3. स्त्री शिक्षा पर एक नुक्कड़ नाटक तैयार कर उसे कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

यतीन्द्र मिश्र (नौबतखाने में इबादत)

1. भारत रत्न से विभूषित व्यक्तियों की सूची बनाइए।
2. अपने प्रिय कलाकार से साक्षात्कार लेने के लिए एक प्रश्नावली तैयार कीजिए।
3. भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्रों के चित्र एवं नाम चार्ट पर प्रस्तुत कीजिए ।

भदंत आनन्द

4. किन्हीं पाँच वैज्ञानिक विशेषताएँ लिखिए ।

कौशल्यायन (संस्कृति)

1. भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ लिखिए ।

कृतिका

मधुकांकरिया
(साना साना हाथ जोड़ि)

1. अपने द्वारा की गई किसी यात्रा अथवा पर्यटन का वृत्तांत प्रस्तुत कीजिए।
2. प्रकृति की सुन्दरता बनाए रखने में आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं।
3. पर्वतीय सौन्दर्य विषय पर एक निबन्ध लिखिए ।

सार–भारत प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त सुन्दर देश है जिसके तटीय इलाकों में समशीतोष्ण जलवायु पाई जाती है। यह जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा और क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ देश है। यहाँ अनेक समस्याएँ हैं फिर भी भारत हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। औद्योगिक विकास होने से लोगों का जीवन सुखमय बन रहा है। यह देश शिक्षा, संचार, परिवहन जैसे हर क्षेत्र में चहुँमुखी उन्नति कर रहा है । भारत प्रगतिशील राष्ट्रों में गिना जाता है।

एफ.ए. 4 के लिए क्रियाकलाप/गतिविधियाँ

तुलसीदास

1. दोहा एवं चौपाई का परिचय लिखते हुए इनके दो-दो उदाहरण चार्ट पर लिखिए ।
2. राम,लक्ष्मण, परशुराम एवं विश्वामित्र को इन पदों में अन्य किन नामों से संबोधित किया गया है ? उनकी सूची बनाएँ ।
3. क्रोध अंधा होता है और इससे बनते काम भी बिगड़ जाते हैं इस कथन के पक्ष और विपक्ष में पाँच-पाँच तर्क दीजिए ।

गिरिजा कुमार माथुर

1. 'असफलता मिलने पर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए' विषय पर अपने मित्र को एक पत्र लिखिए ।
2. छाया शब्द के विविध अर्थ लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. हम होंगे कामयाब गीत को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।
4. वार्षिक खेलकूद दिवस के अवसर पर उम्मीद के प्रतिकूल आपका सदन हार गया। इस हार की वेदना को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ।

ऋतुराज (कन्यादान)

1. स्त्री को सौन्दर्य का प्रतिमान बना दिया जाना ही उसका बंधन बन जाता है । विषय पर वाद-विवाद प्रस्तत कीजिए ।
2. कन्यादान शीर्षक की सार्थकता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।
3. विवाह समारोह में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की सूची बनाइए।

मंगलेश डबराल (संगतकार)

1. आपके विद्यालय में काव्य पाठ का आयोजन है। इस संबंध में सूचना पट्ट के लिए एक नोटिस तैयार कीजिए ।
2. आपके विद्यालय में किसी प्रसिद्ध संगीतकार के कार्यक्रम का आयोजन रखा गया है। मंच संचालन आपको करना है। एक रूपरेखा तैयार कीजिए स।
3. गायक एवं संगतकारों की भूमिका पर एक छायाचित्र तैयार कीजिए।

गद्यांश 4

बढ़ती जनसंख्या स्वयं में समस्या तो है ही, यह अनेक समस्याएँ पैदा भी करती हैं । बढ़ती जनसंख्या, महँगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, भुखमरी, परिवहन, आवास आदि की समस्या उत्पन्न करती है। अब जनसंख्या वृद्धि की समस्या किसी देश विशेष की नहीं बल्कि वैश्विक समस्या बन चुकी है। जनसंख्या बढ़ने का क्रम यदि नहीं रूका तो वह दिन दूर नहीं जब प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो जाएँगे। उन्नति का शिखर छूने के लिए जितनी योजनाएँ बनाई जाती हैं वे सब जनसंख्या वृद्धि के कारण अप्रभावी हो जाती हैं। इसका सीधा असर रोटी, कपड़ा और आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं पर पड़ता है। जब व्यक्ति को भरपेट भोजन नहींमिलता है तो वह कोई भी पाप-कर्म कर बैठता है, जिसके मूल में जनसंख्या वृद्धि ही है। नशाखोरी, बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति, बढ़ती लूटमार इसी समस्या के दुष्परिणाम हैं । जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए जन-जागरूकता फैलाना आवश्यक है। इसके अलावा बहुविवाह को रोकना होगा। लोगों को शिक्षित करना होगा तथा चुनाव लड़ने और सरकारी नौकरियों की अपेक्षा रखने वालों को दो बच्चों तक सीमित रहने की वचनबद्धता निभाना होगा ताकि इस पर प्रभावी नियंत्रण लगाया जा सके ।

सार–बढ़ती जनसंख्या स्वयं में समस्या होने के अलावा अनेक समस्याओं का कारण भी है। यह वैश्विक समस्या किसी दिन संसाधन समाप्त होने का कारण बन सकती है। इसके विकास के लिए बनाई योजनाएँ अप्रभावी हो जाती हैं। इससे मूलभूत आवश्यकताओं पर भी असर होता है जिससे मनुष्य पाप-कर्म करने को विवश होता है । इससे अपराध बढ़ते हैं। इसे रोकने के लिए जन-जागरूकता और शिक्षा का प्रचार-प्रसार आवश्यक है।

गद्यांश 5

विश्व के मानचित्र पर भारत की स्थिति अँगूठी में जड़े नगीने की भाँति है जो विश्व के उत्तर-पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है । इसके उत्तर में पर्वतराज हिमालय और दक्षिण में इसके चरणों को पखारता हुआ हिन्द महासागर है। पूरब दिशा में बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर हैं यहाँ तटीय इलाकों में समशीतोष्ण जलवायु पाई जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ और जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में दूसरा स्थान भारत का है। जनसंख्या वृद्धि, महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि इस देश की प्रमुख समस्याएँ हैं। पिछले कुछ दशकों में भारत ने औद्योगिक विकास किया है। हरित-क्रान्ति अभियान द्वारा अनाज का उत्पादन बढ़ता है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ कृषि में पारंपरिक उपकरणों की जगह वैज्ञानिक उपकरणों का पर्याप्त उपयोग किया जाने लगा है। लोगों का जीवन सुखमय बनने लगा हैं शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए नित नए विद्यालय ओर विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। भारत चिकित्सा, परिवहन, संचार हर क्षेत्र में उन्नति की ओर कदम बढ़ाता जा रहा है। जीवनोपयोगी अधिकांश वस्तुएँ यहीं के कारखानों में बनने लगी हैं। आज भारत की गणना विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों में की जाती है। भारत उन्नति के शिखर पर पहुँचे यही मेरी कामना है।

हाल-चाल पूछने के लिए भी ठीक से समय नहीं है। सच्चाई, ईमानदारी, मानवीयता, बड़ों का सम्मान, माता-पिता, गु+ और अतिथि को देवता मानने वाले मानवीय मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं। इससे अधिक दुर्भाग्य क्या होगा कि माता-पिता जिस संतान को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं पढ़ा-लिखाकर योग्यबनाते हैं वही सन्तान उन्हें वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर करता है। चारों ओर बढ़ता भ्रष्टाचार, मिलावट, लूट-खसोट, रिश्वतखोरी, उत्तरदायित्वों का लापरवाही से निर्वाह सब नैतिक शिक्षा की कमी के परिणाम हैं। सामने कराहता, मौत के मुँह में जाता मरीज और हड़ताल की बातें करते डॉक्टर, यह अनैतिकता ही तो है । नैतिकता के अभाव में लोगों में पारस्परिक सद्भाव, परोपकार, उदारता घट रही है तथा आत्मकेन्द्रिता, संज्ञा शून्यता बढ़ रही हैं अत: मनुष्य को मनुष्य बने रहने के लिए नैतिकता अत्यन्त आवश्यक है।

सार–सभ्यता की ओर कदम बढ़ाते मनुष्य के जीवन में भौतिकवाद बढ़ता गया और नैतिकता पीछे छूटती गई। अत: नैतिक शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती जा रही है क्योंकि सच्चाई, ईमानदारी, मानवीयता, माता-पिता का सम्मान जैसे मानवीय मूल्य पीछे छूटते जा रहे हैं । माता-पिता वृद्धावस्था में वृद्धाश्रम में रहने को विवश हो रहे हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, मिलावट, लूट-खसोट रिश्वतखोरी, उत्तरदायित्वहीनता के इस युग में नैतिकता की बहुत आवश्यकता है।

गद्यांश-3

भारत में अनेक खेल खेले जाते हैं पर उनमें क्रिकेट लोकप्रियता के शिखर पर है। भारत में जब कभी राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय मैच खेले जाते हैं तो हर आयुवर्ग के करोड़ों भारतीय टेलीविजन से चिपके नजर आते हैं या रेडियो पर क्रिकेट कमेन्ट्री सुनते दिख जाते हैं। युवा-वर्ग की दीवानगी इस खेल के प्रति देखते ही बनती है। वर्तमान में क्रिकेट तीन प्रारूपों में खेला जाता है पहला प्रारूप पाँच दिवसीय टेस्ट, दूसरा एकदिवसीय और तीसरा प्रारूप ट्वेन्टी-ट्वेन्टी है । आज टेस्ट क्रिकेट की लोकप्रियता में कमी आई है क्योंकि पाँच दिन तक चलने वाले मैच का परिणाम प्राय: अनिर्णीत रह जाता है। एकदिवसीय मैच पचास-पचास ओवरों के लिए खेला जाता है। ट्वेंटी-ट्वेंटी मैच बीस-बीस ओवरों के लिए खेला जाता है। ये दोनों ही प्रारूप लोगों में बहुत ही लोकप्रिय है । इसकी लोकप्रियता के सामने वालीबॉल, हॉकी, फुटबॉल खो-खो, तैराकी, दौड़, कुश्ती, कबड्डी आदि दबकर रह गए हैं। आज हर बच्चे की इच्छा सचिन बनने की रहती है। इस खेल की लोकप्रियता के पीछे असीमित पैसा, यश और लोकप्रियता मिलता है। इसके अलावा रेडियो, टी.वी., समाचार पत्रों आदि का भी इसकी लोकप्रियता में योगदान है ।

सार–भारत में क्रिकेट लोकप्रियता के शिखर पर है। युवा-वर्ग इसके पीछे पागल जैसा हो रहा है । आज यह टेस्ट मैच, एक-दिवसीय और बीस-बीस ओवरों के प्रारूप में खेला जाता है। इनमें एकदिवसीय और ट्वेन्टी-ट्वेन्टी खासे लोकप्रिय हैं। इसकी लोकप्रियता के सामने अन्य खेल दब` गए हैं। इससे प्राप्त असीमित पैसा, यश और लोकप्रियता के कारण आज हर बच्चा सचिन बनना चाहता है ।

2. जो अंश, वाक्यों अथवा महत्वपूर्ण लगे उन्हें रेखांकित कर लेना चाहिए ।

3. सार लेखन करते समय गद्यांश में आए मुहावरे, सूक्तियों और कहावतों को छोड़ देना चाहिए ।

4. सार-लेखन करते समय अपनी तरफ से कुछ भी नहीं जोड़ना चाहिए ।

5. सा-लेखन में पुनरूक्ति नहीं करनी चाहिए ।

6. यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई महत्वपूर्ण अंश या विचार न छूटने पाए ।

7. सार-लेखन में विचारों की क्रमबद्धता, पूर्णता तथा स्पष्टता उसी प्रकार रखना चाहिए जैसा पूर्ण गद्यांश में दिया गया हो ।

8. अंत में इसे एक बार अवश्य पढ़ लिया जाना चाहिए, जिससे कुछ छूटा हो तो उसे लिखा जा सके।

9. सार-लेखन मूल गद्यांश के तिहाई अंश में करना चाहिए ।

गद्यांश-1

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह अपने सुख-दुख के अनुभव को किसी के साथ बाँटना चाहता है । कुछ बातें गोपनीय भी होती है, जिन्हें वहसभी के सामने प्रकट नहीं कर सकता है, इसके लिए उसे बच्चे मित्र की आवश्यकता होती है। मनुष्य सुख के पल भले ही अकेले बिता ले पर दुख में उसे मित्रकी आवश्यकता अवश्य ही होती है। सच्च मित्र वही है जो विपत्ति में साथ निभाए । कहा भी गय है–'विपत्ति कसौटी जे करो तेई सोचे मीत ।' सच्च मित्र औषधि और अमूल्य निधि के समान होता है। ऐसा मित्र मिलना कठिन होता है ।मित्र का चुनाव करते समय हमें सावधान रहने की जरूरत होती है। केवल बाहरी चमक-दमक, ऐश्वर्य, पद और प्रतिष्ठा देखकर किसी को भी मित्र नहीं लेना चाहिए। सच्चा मित्र मिलना जितना कठिन है, सच्ची मित्रता निभाना उतना ही कठिन है। सच्ची मित्रता आयु, जाति-धर्म, अमीर-गरीब का भेद नहीं मानती है। हमें भी श्रीकृष्ण और सुदामा की तरह सच्ची मित्रता निभाकर सच्ची का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे यह धन अनमोल ही बना रहे ।

सार–मनुष्य को अपने सुख-दुख बाँटने के लिए मित्र की आवश्यकता होती है । संकट में यह जरूरत और भी बढ़ जाती है, पर सच्चा मित्र ही विपत्ति में हमारा साथ निभाता हैं मित्र का चुनाव करते समय सावध ान रहने की आवश्यकता होती है। सच्ची मित्रता निभाना भी कठिन होता है। अत: जाति-धर्म, अमीर-गरीब का भेदभाव छोड़कर श्रीकृष्ण और सुदामा की तरह मित्रता निभानी चाहिए।

गद्यांश 2

मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की ओर कदम बढ़ाया त्यों-त्यों भौतिकता उस पर हावी होती गई और भौतिकवाद का प्रचार-प्रसार बढ़ता गया। विज्ञान की उन्नति के साथ भौतिकवाद बढ़ा, नैतिकता पीछे छूटी और नैतिक शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती गई। यह भौतिकवाद का ही असर है कि लोगों को घर आए मेहमान से

धन्यवाद सहित ।

भवदीय

श्रमाकांत पाल

संयोजक, दैनिक रेलयात्री संघ, साहिबाबाद ।

अनौपचारिक पत्र

प्रश्न–छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें योग एवं प्राणायाम का महत्व बताया गया हो और नियमित रूप से इनका अभ्यास करने का सुझाव भी दिया गया हो ।

ए–32/6, नवीन नगर,

दिल्ली ।

दिनांक : .....

प्रिय अनुज,

शुभाशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र से प्रतीत होता है कि छात्रावास में रहकर तुम कुछ अस्वस्थ से रहने लगे हो । इसका उपाय यह है कि तुम प्रतिदिन योग और प्राणायाम का अभ्यास करो । योग से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं । प्राणायाम प्राणवायु को सुचारू रूप से पूरे शरीर में संचारित करता है । तुम टी.वी. पर बाबा रामदेव का योग कार्यक्रम देखकर इस क्रियाओं को भली प्रकार कर सकते हो। तो ही दिनों में तुम्हें अच्छा अंतर दिखाने को मिल जाएगा। इसके लिए प्रातः काल 5–6 बजे का समय सबसे अच्छा होगा। योग एवं प्राणायाम का महत्व तो प्राचीन काल से रहा है। तुम्हें भी इन क्रियाओं को दैनिक जीवन का हिस्सा बना लेना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि तुम पूर्णतः स्वस्थ हो जाओगे ।

तुम्हारा शुभ चिन्तक

रमेश वर्मा

सार लेखन

सार लेख क्या है ?

'सार' शब्द का अर्थ है–तत्व या निचोड़ । अर्थात् किसी गद्यांश को इस प्रकार संक्षेप में लिखना, जिससे कि उसका मूल भाव या मूल विचार छूटने न पाए तथा कम महत्वपूर्ण अंश को छोड़ दिया जाए ।

अच्छा सार–लेखन कैसे करें ?

सार-लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

1. दिए गए गद्यांश को अत्यन्त सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि उसका भावसमझ में आ जाए ।

अत: अपेक्षा करता हूँ कि साक्षात्कार हेतु अवसर प्रदान करेंगे ।

सधन्यवाद

भवदीय

शशांक शर्मा

दिनांक 18/11/20

संलग्न सूची :

1. कक्षा दस का प्रमाण पत्र
2. कक्षा बारह का प्रमाण पत्र
3. बी. सी. ए. का प्रमाण पत्र
4. अनुभव प्रमाण पत्र
5. चरित्र प्रमाण-पत्र

संपादक को पत्र

प्रश्न–किसी प्रख्यात समाचार पत्र के सांपदक के नाम पत्र लिखकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए।

संपादक,

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

दिनांक.....

विषय : रेल आरक्षण की नई व्यवस्था

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से रेल आरक्षण में आए सुधार की प्रशंसा करना चाहता हूँ ताकि इसका लाभ सभी यात्री उठा सकें ।

रेलवे ने ई-टिकटिंग व्यवस्था लागू कर घर बैठे कम्प्यूटर पर रेल टिकटों का आरक्षण करना आरंभ कर दिया है इससे आरक्षण कार्यालय जाने और लम्बी लाइनों में लगने के झंझट से छुटकारा मिल गया है। टिकटों की कालाबाजारी भी प्राय: समाप्त हो गई है। इस व्यवस्था के लिए रेल मंत्रालय बधाई का पात्र है। आशा है रेलवे भविष्य में भी जनहितकारी योजनाएँ लागू करता रहेगा ।

आवेदन-पत्र

10. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में लिपिक पदों के रिक्त स्थानों को भरने के लिए रोजगार समाचार में विज्ञापन आया है, उसका हवाला देते हुए सचिव के नाम आवेदन पत्र लिखिए ।

सेवा में,

सचिव महोदय,

एन.सी.ई.आर.टी.

नई दिल्ली ।

विषय–लिपिक पद की नियुक्ति हेतु आवेदन पत्र ।

महोदय,

निवेदन है कि साप्ताहिक पत्र रोजगार समाचार दिनांक 21/11/88 के विज्ञापन के अनुसार लिपिक पद हेतु आवेदन पत्र प्रेषित है।

नाम : शशांक शर्मा

पिता का नाम : श्री वी. के. शर्मा

जन्म तिथि : बी–367, प्रेम बिहार सेक्टर, 62, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर

शैक्षणिक योग्यता :

कक्षा	विद्यालय	बोर्ड/एस.ई.	उत्तीर्ण	प्राप्तांक	विषय
दस	रा.स.शि.उ.	सी.बी.एस.ई.	2001	305/500	हिन्दी, अंग्रेजी, गणित अध्ययन
		मा. आनन्द विहार दिल्ली			
बारह	रा.स.शि.उ.	सी.बी.एस.ई.	2003	295/500	अंग्रेजी, गणित, रसायन, विज्ञान
बी.सी.ए.	आई.एम.एस.नोएडा	चौ.च.शि. मेरठ	2008	425/700	कम्प्यूटर

विशेष :

1. मुझे टंकण में विशेष कुशलता प्राप्त है ।

2. प्रकाशन विभाग में कार्य करने का लगभग दस माह का अनुभव प्राप्त है, जिसका प्रमाण पत्र आवेदन पत्र के साथ संलग्न है ।

मान्यवार, माननीय

मैं निवेदन करता हूँ कि .....

.....

प्रार्थी.....

क ख ग

तिथि .....

औपचारिक-पत्र

प्रश्न–आपके नगर की एक प्रसिद्ध डेयरी में दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थों में मिलावट की जाती है। नगर के स्वासयि अधिकारी को पत्र द्वारा जानकारी देते हुए उचित काय्रवाही के लिए अनुरोध कीजिए।

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम

राजौरी गार्डन, नई दिल्ली ।

विषय : दूध एवं दुग्ध पदार्थों में मिलावट संबंधी जानकारी विषयक ।

महोदय,

मैं आपका ध्यान रक्षुवीर क्षेत्र में चल रही 'गुप्ता' डेयरी द्वारा मिलावट के अनैतिक धंधे की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस डेयरी में दूध वितरित होता है तथा दूध से बने पदार्थ पनीर, दही, खोया आदि बनाकर बेचे जाते हैं। इन पदार्थों में भारी मिलावट की जाती है। इसकी शिकायत कई बार की गई है, पर मालिक स्वास्थ्य कर्मचारियों को रिश्वत देकर अपना काम निरंतर जारी किये हुए हैं। यह डेयरी लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही हैं आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस डेयरी पर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाए, जिससे यहाँ मिलावट पर रोक लगाई जा सके।

सधन्यवाद

भवदीय

श्रमेश

संयोजक,

जन चेतना मंच, रघुवीर नगर,

नई दिल्ली ।

दिनांक.....

कार्यालीय पत्र का प्रारूप

पत्र संख्या

दिल्ली सरकार,

शिक्षा विभाग ।

प्रेषक.....

.....

दिनांक.....

सेवा में,

विषय :

मान्यवर,

मुझे आपके पत्र सं.....दिनांक.....के संदर्भ में यह स्पष्टीकरण देना है कि..... ।

भवदीय

.....

(हस्ताक्षर)

नाम व पद

.....

संलग्न प्रतियाँ

(1) .....

(2) .....

आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रतिलिपि प्रेषित :

(1) .....

(2) .....

आवेदन पत्र का प्रारूप

सेवा में,

प्राचार्य महोदय,

.....

विषय : .....

पत्र-लेखन

पाठ्यक्र में निम्नलिखित पत्र दिए गए हैं–

औपचारिक पत्र–प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र

अनौपचारिक पत्र–बधाई पत्र, धन्यवाद पत्र, शुभकामना पत्र, सांत्वना पत्र

औपचारिक पत्र

पत्र का प्रारूप	संबंध	प्रारंभ	समापन
आवेदन पत्र	प्रधानाचर्य	मान्यवर, महोदय	भवदीय, निवेदन
	संबंधित अधिकारी का पद	माननीय, श्रीमान्जी	आपका आज्ञाकारी
		मान्य/मान्यवर माननीय	प्रार्थी, विनीत
		श्रीयूत्, महोदय	भवदीय
कार्यालयी पत्र	संपादक, नगर निगम अधिकारी	माननीय, मान्यवर	भवदीय, प्रार्थी
	कनदेय मंत्री, रेलवे अधीक्षक आदि	महोदय, आदरणीय	निवेदक, विनीत

1. औपचारिक पत्रों में विषय लिखकर रेखांकित कीजिए ।

2. औपचारिक पत्रावली का एक सुनियोजित ढाँचा होता है । उसके शीर्ष भाग में पाने वाले का पता भी बाईं ओर लिखा जाता है मध्य भाग को समाप्त करने के बाद धन्यवाद लिखा जाता है उसके बाद स्वनिर्देश का उल्लेख होता है ।

3. आदर्श पत्र वह होता है जिसका आरंभ और समापन एक ही पृष्ठ पर हो।

अनौपचारिक पत्र

पत्र का प्रारूप	प्रारम्भ	संबंध	समापन
अनौपचारिक पत्र	बड़ों के लिए	भाई साहब	आपका/आपकी सुत्रुत्री
बधाई पत्र	आदरणीय, पूज्य	दादाजी, मामाजी, पिताजी	सुपुत्र/सुपुत्री / प्रपौत्र
धन्यवाद पत्र	श्रद्धेय, परम आदरणीय	बहनजी, नानाजी	नाती/नातिन/भतीजा
शुभकामना पत्र	मान्य, पूजनीय	नानाजी, चाचाजी	भतीजी के साथ नाम
सांत्वना पत्र	छोटे तथा बराबर के	ताऊजी, छोटा भाई	बड़ा भाई/बहन,
आपका			
	साथियो के लिए प्रिय उसका	बहन, मित्र, सेली	आपकी मित्र/ सहेली
	नाम लिखें		के साथ नाम

टाँग दी गई। देखते ही देखते ऊपर ही स्टेशन बनने लगे। इस तरह स्तम्भ, स्तम्भों के ऊपर पटरी, स्टेशन, मैट्रो खड़ी हो गई। जनता के लिए सब कुछ नया और आश्चर्यजनक ।

दिल्ली की जनसंख्या निरंतर अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही है, अनुरूप वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। वाहनों के निरंतर धुआँ उगलते रहने से दिल्ली का प्रदूषण भी लगातार बढ़ रहा है। ऐसी चरमराती विषम परिस्थितियों में मैट्रो वरदान सिद्ध हुई है। मैट्रो स्टेशनों की सुव्यवस्था को देखकर यात्री सुखद आश्चर्य का अनुभव करते हैं। इससे समय में बचत होती है तथा यात्रा सुरक्षित ढंग से पूरी होती है।

लोगों में मैट्रो ट्रेन के प्रति तरह-तरह की जिज्ञासा तथा उत्सुकता थी । इसे शांत करने तथा यात्रा करने के उद्देश्य से मैंने मैट्रो स्टेशन पर टोकन लिया। टोकन को विशेष स्थान पर रखते ही खटाक से प्रवेश द्वार खुला और मैं स्वचालित सीढ़ियों से जा चढ़ा। ऊपर के सौन्दर्य को देख भी न पाया था तब तक तो मैट्रो आ गई। मैट्रो रूकी, माइक से सूचना मिल रही थी, यात्रियों को सावधान किया जा रहा था। मैट्रो का दरवाजा खुला और सभी यात्रियों को चढ़ता देख मैं भी मैट्रो में चढ़ गया। स्वयमेव ही मैट्रो का दरवाजा बन्द हुआ। मैट्रो आगे बढ़ी ।

मैट्रो के अंदर भी प्रत्येक स्टेशन की और सावधानियाँ बरतने की सूचना मिल रही थी, स्टेशनों की स्वचालित लिखित सूचनाएँ हिन्दी-अंग्रेजी में मिल रही थी। इन सबको देखने में मैं तल्लीन था की गन्तव्य स्टेशन आ पहुँचा। घंटों की यात्रा, मिनटों में हो गई। अब प्रतीत हुआ कि मैट्रो सबके लिए सुखद आश्चय्र है।

मैट्रो के लिए दिल्ली –प्रांतीय सरकार और केन्द्रीय सरकार ने संयुक्त रूप से सम्बन्धित संस्था में सन् 1995 में पंजीकरण करवाया और 1996 में 62.5 कि.मी. दूरी के लिए मैट्रो परियोजना को स्वीकृति मिल गई। दिसम्बर 2002 में परियोजना को साकार रूप मिल गया। 24 दिसम्बर को प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने हरी झंडी दिखाई और मैट्रो चल पड़ी। आज मैट्रो की उपयोगिता और सफलत को देखकर इस परियोजना ने पैर पसारना शुरूकर दिया हैं मैट्रो के कई रूट नए शुरू हो गए हैं और नए-नए रूटों पर प्रगति से कार्य चल रहा है।

मैट्रो ने अपनी अलग-अलग पहचान, अलग-अलग अस्तित्व बनाया हैं इसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बहुत से प्रबन्ध किए गए हैं। मानवतापूर्ण व्यवहार के लिए निरंतर घोषणाएं होती रहती हैं। यह राष्ट्रीय संपत्ति सचमुच में अपनी संपत्ति प्रतीत होती है। इसके सौन्दर्य को बनाए रखने के लिए यात्रियों के लिए निर्देश प्रसारित किए जाते हैं। इस तरह मैट्रो की यात्रा सुखद यात्रा है। भीड़ के दबाव को कम करने के लिए अद्‌भुत देन है ।

(4) **समाज में फैलता भ्रष्टाचार**–1. भूमिका 2. भ्रष्टाचार का अर्थ 3. भ्रष्टाचार की व्यापकता 4. भ्रष्टाचार के कारण 5. भ्रष्टाचार उन्मूलन के उपाय ।

(5) **महानगरीय जीवन की समस्याएँ**–1. भूमिका, 2. महानगरों के आकर्षण के कारण 3. महानगरों की समस्याएँ 4. महानगरीय समस्याओं का निदान 5.उपसंहार

(6) **नारी शिक्षा काम महत्व**–1. प्राचीन काल में नारी का स्थान 2. स्वतंत्रता से पूर्व नारी का स्थान 3. स्वतन्त्रता के बाद नारी-शिक्षा व उसके जीवन स्तर में सुधार 4. संतान की प्रथम पाठशाला 5. देश के विकास के लिए नारी शिक्षा आवश्यक 6. उपसंहार

(7) **प्रदूषण की समस्या**–1. प्रदूषण के कारण 2. प्रदूषण की व्यापाकता 3. प्रदूषण के दुष्प्रभाव 4. प्रदूषण से बचने का उपाय 6. उपसंहार

(8) **संगति का प्रभाव**–1. भूमिका 2. संगति के प्रभाव 3. संगति के प्रकार 4. उदाहरण 5. निष्कर्ष ।

(9) **विद्यार्थियों में घटते मानवीय मूल्य**–1. मानवीय मूल्य का अर्थ 2. आवश्यकता 3. मानवीय मूल्य घटने के कारण 4. मानवीय मूल्यों की कमी से समाज को हानियाँ 5. उपसंहार ।

(10) **मेरी अविस्मरणीय यात्रा**–1. प्रस्तावना 2. यात्रा का कार्यक्रम 3. स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु 4. प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रभाव 5. यात्रा की उपयोगिता । 6. निष्कर्ष ।

(11) **जीवन में खेलों का महत्व**–1. खेलों के प्रकार 2. खेलों का महत्व 3. धन यश प्राप्ति के साधन 4. अनुशासन का पालन 5. मानवीय मूल्य बढ़ाने में सहायक

(12) **निरन्तर बढ़ती महँगाई**–1. प्रस्तावना2. महँगाई के कारण 3. सामाजिक जीवन पर महँगाई पर प्रभाव 4. महँगाई दूर करने का उपाय 5. जमाखोरी की प्रवृत्ति 6. निष्कर्ष

मैट्रो यात्रा

दिल्ली महानगर में मैट्रो–व्यवस्था एक कल्पना थी, वह आज साकार रूप में है । मैट्रो महानगरीय भीड़ में यातायात की सुव्यवस्था है। इस पर विचार प्रकट कीजिए ।

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना 2. वरदान रूप में मैट्रो और दिल्ली 3. मैट्रो की प्रथम यात्रा 4. मैट्रो की कहानी 5. उपसंहार

मैट्रो का नाम हमारे लिए कल्पना था । मैट्रो रेल की तरह है, वह धरती से ऊपर चलेगी या नीचे दिल्ली में इसे साकार रूप देने के लिए कार्य सुचारू रूप से होने लगा। स्तम्भ खड़े होने लगे। स्तम्भों के ऊपर पटरी

अस्त्र शस्त्र की होड़ में परमाणु शक्ति का दुरुपयोग ।

धरती से खनिज लवण व गैसीय पदार्थ निकाले जा रहे हैं ।

निबन्ध लेखन–10 अंक (250-300 शब्द)

निबन्ध–निबन्ध गद्य साहित्य की वह विद्या है जिसमें निबन्धकार किसी विषय पर अपने विचार स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करता है । निबन्धकार के विचार पूर्णतया मौलिक एवं श्रृंखलाबद्ध होते हैं जिसमें क्रमबद्धता दिखाई देती है ।

निबन्ध की विशेषताएँ–एक निबन्ध की निम्नलखित विशेषताएँ होती हैं–

1. निबन्ध की भाषा सरल सहज एवं विषयानुकूल होनी चाहिए ।

2. निबन्धकार के विचारों में क्रमबद्धता एवं सुसंबद्धता होनी चाहिए तथा उनके विचार सुसंगत होने चाहिए।

3. विचारों में क्रमबद्धता एवं सुसंबद्धता होनी चाहिए ।

4. बार-बार एक ही वाक्य के प्रयोग से बचना चाहिए ।

5. सूक्तियों लोकोक्तियों तथा मुहावरों का प्रयोग कर निबन्ध की भाषा को सरस, रोचक एवं प्रभावशाली बनाना चाहिए ।

निबन्ध के मुख्यत: तीन अंग होते हैं । इसी आधार पर प्रभावशाली ढंग से निबन्ध लिखा जाना चाहिए।

(1) **परिचय/भूमिका**–निबन्ध की भूमिका ऐसी होनी चाहिए जिसमें आकर्ष्ण हो एवं रोचकता कमा समावेश हो और जिससे पाठक के मन में प्रारम्भ से अंत तक निबन्ध पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो ।

(2) **विस्तार**–विस्तार निबन्ध का द्वितीय अंग माना जाता है जिसमें निबन्ध के विषय का पूर्ण विवेचन अलग-अलग अनुच्छेदों में प्रस्तुत किया जाता है ।

(3) **उपसंहार**–यह निबन्ध का अंतिम भाग है जिसमें निबन्ध का सारसमाहित होता है । अत: इसमें विचारों का सार (मूल भाव) प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।

विद्यार्थी निम्नलिखित संकेत बिन्दुओं के आधार पर प्रभावशाली ढंग से निबन्ध लिखें–

(1) **हमारा प्यारा भारतवर्ष**–1. भारत का नामकरण 2. गौरवशाली इतिहास 3. प्राकृतिक सौन्दर्य, 4. अनेक संस्कृतियों व धर्मों का संगम 5. अनेकता में एकता 6. निष्कर्ष ।

(2) **विज्ञान वरदान या अभिशाप**–1. प्रस्तावना, 2. आधुनिक युग की विज्ञान के युग 3. विज्ञान की उपयोगिता 4. विज्ञान का दुरुपयोग मानव जीवन के लिए अभिशाप 5. निष्कर्ष ।

(3) **बेरोजगारी की समस्या**–1. परिचय 2. बेरोजगारी देश के विकास में किस प्रकार बाधक है ? 3. दुष्परिणाम 4. बेरोजगारी के कारण 5. बेरोजगारी की समस्या से निजात पाने का उपाय 6. निष्कर्ष ।

6. क्या बाह्य दबाव केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य दूसरे क्षेत्र से लोगों को भी प्रभावित करते हैं, क्यों ?

उत्तर–बाह्य दबावों का प्रभाव प्रत्येक प्रकार के कलाकार पर समान रूप से होता है । हर प्रकार का कलाकार समाज में या मर्तिकार यदि उसे एक बार जीतु मिल जाती है तो वह अपना क्षेत्र नहीं छोड़ पाता । उसे प्रशंसकों, दर्शक खरीददारों के दबाव के कारण अपना रचना कार्य करते रहना पड़ता है। आर्थिक दबाव भी प्रत्येक क्षेत्र के कलाकारों को प्रभावित करते हैं ।

7. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के आंतरिक व बाहरी दोनों दबाव का परिणाम है यह आप कैसे कह सकते हैं ?

उत्तर–लेखक ने हिरोशिमा में हुए भीषण नरसंहार की पीड़ा को वहाँ जाने से पहले ही अनुभव कर लिया था । लेकिन जापान यात्रा के दौरान उन्होंने उस विनाशलीला के दुष्प्रभावों का साक्षात्कार भी किया तत्पश्चात् उन्होंने हिरोशिमा कविता लिखी। यह अभिव्यक्ति उनकी यात्रा के बाद बाह्य दबावों व अनुभूति दोनों के कारण से हुई है। एक संवेदनशील लेखक यदि हिरोशिमा यात्रा के बाद किसी भी प्रकार से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं करता तो उसके पाठकों की प्रतिक्रिया विस्मयजनक होगी । अत: बाह्य दबावों ने भी लेखन को बाध्य अवश्य किया होगा ।

8. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्वपूर्ण होता है ये बाह्य कौन-कौन से हो सकते हैं ?

उत्तर–रचनाकारों पर स्वयं के अनुभव के अतिरिक्त बाह्य दबाव भी होते हैं यश प्राप्त करने के बाद लिखना विवशता हो जाता है। कई बार संपादक प्रकाशक आदि लेखकों पर अपनी पसंद का लिखने का दबाव डालते हैं । कभी-कभी आर्थिक विवशता भी दबाव का कारण होती है ।

9. हिरोशिमा के विस्फोट में भोक्ता किस पदार्थ से प्रभावित हुए ?

उत्तर–रेडियम पदार्थ से ।

10. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है । आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह हो रहा है ?

उत्तर–विज्ञान का दुरुपयोग–

चिकित्सा के क्षेत्र में अल्ट्रासाउंड का दुरुपयोग ।

पैदावार बढ़ाने के लिए फसलों पर दवाइयाँ (कीटनाशक) तथा टीकों का प्रयोग ।

ग्लोबल वार्मिंग ।

कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कर फल व सब्जियों का दूषित करना ।

उत्तर–लेखक हिरोशिमा की घटनाओं के बारे में सुनकर तथा उनके कुप्रभावों को प्रत्यक्ष देखकर भी विस्फोट का भोक्ता नहीं बन पाया। एक दिन वह जापान के हिरोशिमा नगर की एक सड़क पर घूम रहा था। अचानक उसकी नजर एक पत्थर पर पड़ी। उस पत्थर पर एक मानव की छाया छपी हुई थी। वास्तव में परमाणु विस्फोट के समय कोई मनुष्य उस पत्थर के पास खड़ा होगा। रेडियो धर्मी किरणों ने उस आदमी को भाप की तरह उड़ाकर उसकी छाया पतिर पर डाल दी थी। उसे देखकर लेखक के मन अनुभूति जग गई। उसके मन में विस्फोट का प्रत्यक्ष दृश्य साकार हो उठा। उस समय वह विस्फोट भोक्ता बन गया ।

3. 'मैं कयों लिखता हूँ'–के आधार पर बताइए कि–

(क) लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती है ?

(ख) किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किसी तरह उत्साहित कर सकते हैं ?

उत्तर–(क) भीतरी विवशता से । कभी-कभी कवि के मन में ऐसी अनुभूति जाग उठती है कि वह उसे अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल हो उठता है।

(ख) कभी-कभी वह संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजों से तथा आर्थिक लाभ के लिए भी लिखता है। परन्तु दूसरा कारण उसके लिए जरूरी नहीं है। पहला कारण अर्थात् मन की व्याकुलता ही उसके लेखन का मूल कारण बनती है ।

4. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं ?

उत्तर–हिरोशिमा पर लिखी लेखक की कविता को हम उसके आंतरिक दबाव का परिणाम कह सकते हैं इसके लिए उन्हें न तो किसी संपादक ने आग्रह किया न किसी प्रकाशक ने तकाजा किया। न ही उन्होंने इसे किसी आर्थिक विवशता के लिए लिखा। इसे उन्होंने शुद्ध रूप से मन की अनुभूति से प्रेरित होकर लिखा। जब पत्थर पर पिघले मानव को देखकर उनके मन में अनुभूति जाग गई तो कविता स्वयं बन गईं इसीलिए हम इस कविता को आंतरिक दबाव का परिणाम कह सकते हैं । किसी बाहरी दबाव का नहीं ।

5. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा भीतरी अनुभूति उनके लेखन में अधिक मदद करती है क्यों ?

उत्तर–लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखक भीतरी विवशता से पैदा होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से जगती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागते हैं। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और इसमें अभिव्यक्ति होने की पीड़ा नहीं अकुलाती तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता ।

(पूरक पाठ्य पुस्तक)

मैं क्यों लिखता हूँ ? –अज्ञेय

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लेखक क्यों लिखता है ?

उत्तर–लेखक को लगता है कि लिखकर ही वह अपने मन की स्थिति तथा विवशता को जान पाता है जिस कारण से लिखता है उससे मुक्त होने का सुगम मार्ग भी लिखना ही है ।

2. सभी लेखक कृतिकार क्यों नहीं होते ?

उत्तर–सभी लेखक कृतिकार नहीं हो सकते । मात्र अपनी भावनाओं को प्रकट करने से ही कोई अभिव्यक्ति कृति नहीं जाती। कृतिकार सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने पर ही अभिव्यक्ति कृति बन जाती है ।

3. अनुभूति के स्तर की विवशता की क्या विशेषता होती है ?

उत्तर–अनुभूति के स्तर की विवशता तार्किकता पर निर्भर होती है। अनुभव तो घटित होता है और अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य से जुड़कर आत्मसात कर लेती है। अनुभूति ही लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ है और किस तरह से हो रहा है ?

उत्तर–आजकल विज्ञान का दुरुपयोग अनेक जानलेवा कामों के लिए किया जा रहा है। आज आतंकवादी संसार भर में मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं। कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है। कहीं मुम्बई बम विस्फोट किए जा रहे हैं। कहीं गाड़ियों में आग लगाई जा रही है। कहीं शक्तिशाली देश दूसरे देशों को दबाने के लिए उन पर आक्रमण कर रहे हैं। अमरीका ने इराक पर आक्रमण किया तथा वहाँ के जनजीवन को तहस नहस कर डाला।

विज्ञान के दुरुपयोग से चिकित्सक बच्चों का गर्भ में भ्रूण परीक्षण कर रहे हैं। इससे जनसंख्या का संतुलन बिगड़ रहा है। विज्ञान के दुरुपयोग से किसान कीटनाशक और जहरीले रसायन छिड़क कर अपनी फसलों को बढ़ा रही है, प्रदूषण बढ़ रहा है । बर्फ पिघलने का खतरा बढ़ रहा है तथा रोज रोज भयंकर दुघटनाएँ हो रही हैं।

2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

3. 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो राम ! का प्रतीकार्थ समझाइए ।

उत्तर–'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा, लोकभाषा में रचित इस गीत के मुखड़े का शाब्दिक भाव है इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग खो गई है इसका प्रतीकार्थ बड़ा गहरा है । नाक में पहना जाने वाला लौंग सुहाग का प्रतीक है। दुलारी एक गौनहारिन है। वह किसके नाम का लौंग अपने नाक में पहने। लेकिन मन रूपी नाक में उसने टुन्नू के नाम का लौंग पहन लिया है जहाँ वह गा रही है। वहीं टुन्नू की हत्या की गई है। अत: दुलारी के कहने का भाव है–यही वह जगह है जहाँ मेरा सुहाग लुट गया है ।

4. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा कहानी के शीर्षक के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा, एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा कहानी के शीर्षक के औचित्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर–एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा, कहानी के शीर्षक का सामान्य अर्थ है–हे राम इसी स्थान पर मेरी झुलनी (नाक के दोनों छिद्रों के बीच पहने जाने वाला गहना) खो गई है। 'झुलनी सुहाब का प्रतीक है। कहानी की नायिका दुलारी टुन्नू को अपना सुहाग मानती है, किन्तु टुन्नू को देश प्रेमजनित टुन्नू के कार्यों में सहभागी होने पर अली सगीर के हाथों शहीद होना पड़ता है। कहानी के अंतिम भाग में अमन सभा द्वारा आयोजित समारोह में दुलारी को उसी जगह पर जहाँ उसका प्रेमी मारा गया है, वहाँ मौसमी गाना बेमन से गाना पड़ता है। इस गीत में उसकी गहन वेदना प्रकट हो जाती है। अत: उक्त शीर्षक सार्थक (उचित) है ।

5. स्वाधीनता संग्राम के सेनानी विदेशी वस्त्रों की होली जला कर क्या सिद्ध करना चाहते थे ?

उत्तर–स्वाधीनता संज्ञान के सेनानी विदेशी सरकार के प्रति विद्रोह का प्रदर्शन करना चाहते थे। वे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहते थे। अंग्रेजी शासकों के अत्याचार का दमन करना चाहते थे।

6. टुन्नू के लाए उपहार के दुलारी ने क्यों ठुकरा दिया ?

उत्तर–टुन्नू अभी उम्र में बहुत छोटा था वह समाज की ऊँच-नीच नहीं समझ सकता था। दुलारी ने साड़ी को उपेक्षा से फेंक दिया और टुन्नू को खूब खरी-खोटी सुनाई । वह नहीं चाहती थी कि टुन्नू अपने प्रेम प्रयोग को आगे बाढ़ाए क्योंकि इससे उसकी बदनामी होगी जिससे टुन्नू वहाँ फिर कभी न आए ।

7. दुलारी का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर–दुलारी का चरित्र-चित्रण–कुशल गायिका, निर्भीक व स्वाभिमानी, देशप्रेमी, भावुक हृदय, सच्ची प्रेमिका ।

(क) **स्वर कोकिला**–दुलारी का स्वर अति मधुर है । उसे कजरी गाने में तो महारत हासिल है । यही कारण है कि कजली-दंगल में उसे अपने पक्ष से प्रतिद्वन्द्वी बनाकर खोजवाँ बाजार वाले निश्चित थे ।

(ख) **प्रतिभाशाली शायर (कवयित्री)**–दुलारी के पास मधुर कंठ ही नहीं त्वरित बुद्धि भी है। वह स्थिति के अनुसार तुरंत ऐसा पद्य तैयार करके गा सकती थी कि सुनने वाले दंग रह जाते । वह पद्य में ही सवाल जवाब करने में माहिर थी, इसलिए विख्यात शायर भी उसका लिहाज करते थे। उसके सामने गाने में उन्हें घबराहट होती थी ।

(ग) **निर्भीक एवं स्वाभिमानी**–दुलारी स्वस्थ शरीर के मल्लिका है । वह हर रोज कसरत करती है उसका शरीर पहलवानों जैसा हो गया है वह स्वाभिमान से जीती है । पुलिस का मुखबिर फेंकू सरदार उससे बहतमीजी करने की कोशिश करता है तो वह इस बात की परवाह किए बिना कि वह उसे सुख सुविधा देता है कि परवाह किए बिना उसकी झाड़ू से खबर लेती है ।

(घ) **सच्ची प्रेमिका**–दुलारी एक गौनहारिन है। उसके पेशे में प्रेम का केवल अभिनय किया जाता है लेकिन दुलारी टुन्नू से प्रेम करती है वह जान चुकी है कि टुन्नू उसके शरीर को नहीं गायन कला को प्रेम करता है। इसे सात्विक प्रेम का प्रतिदान भी वह उसी की शैली में देती है। वह भी टुन्नू की भाँति रेशम छोड़ खद्दर अपना लेती है। और टुन्नू की दी गई खद्दर की साड़ी पहनकर ही पुलिस वालों के सामने गाती हुई टुन्नु की मृत्यु का शोक मनाती है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि दुलारी के चरित्र की विशिष्टता उसे एक अलग ही स्थान प्रदान करती है ।

2. दुलारी और टुन्नू के प्रेम पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी । यह प्रेम दुलारी को देशप्रेम तक कैसे पहुँचते हैं ?

उत्तर–टुन्नू 16-17 वर्ष का युवक था तो दुलारी ढलते यौवन की प्रौढ़ा थी । टुन्नु घंटे आधार घंटे आकर दुलारी के पास बैठता और उसकी बातें सुनता। वह केवल दुलारी की कला का प्रेमी था। उसे दुलारी की आयु रंग या रूप से कुछ लेना देना न था। दुलारी भी टुन्नू की कला को पहचान कर उसका मान करने लगी थी। यह परस्पर सम्मान का भाव ही प्रेम में बदल गया। कहने को तो दुलारी ने होली पर गांधी आश्रम से धोती लाने वाले टुन्नू को फटकार कर भगा दिया लेकिन टुन्नू के जाने के बाद उसे टुन्नू का बदला वेश उसका कुरता और टोपी का ध्यान आया तो उसे समझने में देर न लगी कि टुन्नू स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गया हैं एक सच्ची प्रेमिका की तरह उसने भी तुरंग वही राह अपनाने का फैसला कर लिया और फेकू सरदार की लाई हुई विदेशी मिलों में बनी महीन धोतियाँ होली जलाने के लिए स्वराज आन्दोलनकारियों की फैलाई चद्दर पर फेंक दी। यह एक छोटा सा त्याग वास्तव में एक बड़ी भावना की अभिव्यक्ति था।

2. संगतकार की आवाज में एक हिचक क्यों सुनाई देती है ?

उत्तर–संगतकार की आवाज में एक हिचक साफ सुनाई देती है क्योंकि वह जान-बूझकर अपनी आवाज को मुख्य गायक से ऊपर नहीं उठने देता क्योंकि उसका काव्य मुख्य कलाकार को सहारा प्रदान करना हे अपनी कला का प्रदर्शन करना नहीं।

3. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं ?

उत्तर–सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान लड़खड़ाते व्यक्ति को उसके सहयोगी विषम परिस्थितियों में उसके साथ रहने का विश्वास देकर उसका आत्मबल बनाए रखने का भरसक प्रयास करते हैं । स्वयं आगे आकर सुरक्षा कवच बनकर उसके पौरुष की प्रशंसा करते हैं। उसके लड़खड़ाने का कारण ढूँढ़ते हैं और उन कारणों का समाधान करने के लिए सहयोगी अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं । आत्मयता से पूर्णरूपेण सहयोग करते हैं ।

4. संगतकार कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि संगतकार जैसे व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होकर भी समान अग्रिम न आकर प्रायः पीछे ही क्यों रहते हैं ?

उत्तर–संगतकार प्रवृति के लोग दल प्रपंच से दूर श्रद्धा के धनी होते हैं वे मुख्य कलाकार के सहयोगी होते हैं । अपने प्रति विश्वास को खत्म नहीं करना चाहते हैं । दूसरे की विशेषताओं को तराशने और सुधारने में लगे रहते हैं और इसे ही अपना कर्तव्य समझते हैं ।

5. संगतकार कविता में कवि क्या संदेश देना चाहते हैं ?

उत्तर–कवि की संगतकार के प्रति सहानुभूति हैं । उसकी दृष्टि में संगतकार मुख्य गायक के समान ही सराहनीय है। मुख्य गायक की सफलता में संगतकार का श्रेय कम करके नहीं देखना चाहिए। यद्यपि मुख्य गायक के बिना संगतकार का अस्तित्व नहीं है। किन्तु मुख्य गायक की सफलता अधिकांशतः संगतकार के सफल सहयोग पर निर्भर है। मुख्य गायक के निराश होने पर विश्वास लड़खड़ाने पर स्वर बिगड़ने पर, उसके तारसप्तक में चले जाने पर संगतकार ही उसे संभालता है। संगतकार के बिना मुख्य गायक की सफलता संदिग्ध रही है । अतः मुख्य गायक की सफलता में दोनों ही समान रूप से सम्माननीय और प्रशंसनीय है ।

4. एही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा

1. दुलारी विशिष्ट कहे जाने वाले सामाजिक सांस्कृतिक दायरे से बाहर है फिर भी अति विशिष्ट है। इस कथन को ध्यान में रखते हुए दुलारी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर–दुलारी एक गौनहारिन है इसलिए समाज में उसको अच्छी नजर से नहीं देखा जाता। वह उपेक्षित एवं तिरस्कृत है। दूसरे शब्दों में वह विशिष्ट कहे जाने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक दायरे से बाहर है, लेकिन अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण अति विशिष्ट है । उसके चरित्र की ये विशेषताएँ उसे विशेष दर्जा प्रदान करती है ।

2. अंतरे की तानों को जंगल क्यों कहा गया है ?

उत्तर–अंतरे की तानों को जंगल कहा गया है क्योंकि गाते वक्त गायक अंतरे में ही उलझकर रह जाता है और स्थायी को भूल जाता है ।

3. 'स्थायी' का क्या अर्थ होता है ?

उत्तर–स्थायी का अर्थ है किसी भी गाने की मुख्य पंक्ति या टेक, जो गीत को गाते वक्त बीच-बीच में दोहराई जाती है ।

4. संगतकार क्या कार्य करता है ?

उत्तर–जब मुख्य गायक अपने गीत में ही डूब जाता है तब संगतकार उसे वापस मूल स्वर में ले आता है और उसे भटकने नहीं देता ।

2. कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राज
और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए ।

1. संगतकार की अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की कोशिश को उसकी मनुष्यता क्यों समझा जाना चाहिए ?

उत्तर–क्योंकि संगतकार स्वयं को पीछे रखकर तथा गुमनाम रहकर मुख्य गायक को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है। जितनी भी प्रशंसा होगी वह मुख्य गायक को मिलेगी और संगतकार को कोई जानेगा तक नहीं फिर भी वह अपने स्वर को नीचा रखता है ।

2. संगतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है ?

उत्तर–संगतकार मुख्य गायक को भटकने से बचाने के लिए तथा उसका उत्साह बढ़ाने के लिए उसका साथ देता है ।

3. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर–भाषा सरल खड़ी बोली हिन्दी है ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संगतकार के माध्यम से कवि किन प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है ?

उत्तर–संगतकार के माध्यम से कवि सहायक कलाकारों के महत्व की ओर संकेत कर रहा है। ये सहायक कलाकार खुद को रखकर मुख्य कलाकार को आगे बढ़ने में योगदान देते हैं। यह बात जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है ।

3. कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–इसका तात्पर्य है कि बेटी अभी केवल सहज भावों को ही समझ पाती है । स्नेह में पली बढ़ी बेटी को अभी दुखों को सहन करने की सामर्थ्य नहीं है ।

4. कन्यादान देते वक्त माँ के दु:ख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है ?

उत्तर–कन्यादान देते वक्त माँ के दु:ख को प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि एक नारी होने के नाते अपने घर छोड़ने का दु:ख वह सबसे अच्छी तरह जानती है । वह जानती है कि उसकी लड़की के जीवन में कैसे-कैसे मोड़ आने वाले हैं ।

5. वैवाहिक जीवन की त्रासदी क्या है ? नव-विवाहिता को ऐसा कब लगने लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बन्धन मात्र है ?

उत्तर–विवाह से पूर्व लड़की अनेक कल्पनाओं को संजोए रहती है । वर्तमान के अभावों में रहकर वह अपेक्षा करती रहती है कि विवाहोपरान्त जीवन में परिवर्तन आएगा । अपनी सभी अपेक्षाओं की पूर्ति होगी । यह धारणा धैर्य बनाए रखती है और माँ के घर अभावों में रह रही बेटी विवाह के बाद सुख की ऊँची-ऊँची कल्पना कामना करती है । विवाह के बाद उसकी कामनाओं पर पानी फिरता दिखाई देता है तो उसे जीवन त्रासदियों से भरा प्रतीत होने लगता है । यही उसके वैवाहिक जीवन की त्रासदी है। उसकी अपेक्षाओं के अनुसार वैवाहिक जीवन नहीं होता है और पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओं के बन्धन में इतना जकड़ दिया जाता है कि पितृगृह में स्नेह से पल रही लड़की घुटन का अनुभव करने लगती है। उस समय ऐसा लगता है कि संपूर्ण परिवार का मर्यादा नव-विवाहिता के मर्यादा पालन में है। परिवार का प्रत्येक जन उसे ही सीख देती दिखाई देती है। तब लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओं का बन्धन मात्र है ।

9. संगतकार–मंगलेश डबराल

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्न के उत्तर लिखिए–

1. गायक जब अंतरे की जटिल में तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ समाज
जेसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

1. पद में 'अनहद' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–'अनहद का अर्थ है सीमा से परे, असीम या दिव्य लोक जहाँ स्वर्गिक आनन्द की अनुभूति हो ।

4. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए :

उत्तर–भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा तम्सम शब्दावली है ।

2. कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की की दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अन्तिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुर्कों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

1. लड़की अभी सयानी नहीं थी से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–कवि कहना चाहता है कि लड़की अभी भोली तथा सरल है उसे दुनिया के छल प्रपंचों की जानकारी नहीं है ।

2. लड़की को दु:ख बाँचना नहीं आता था–का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–लड़की को दु:ख बाँचना नहीं आता था । तात्पर्य है कि लड़की जीवन की आनेवाली जिम्मेदारियों और कष्टों से भली-भाँति परिचित नहीं थी ।

3. पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर–कवि कहना चाहता है कि उसे उसके आगामी जीवन की एक धुंधला सा अहसास था कि उसका जीवन अब कैसा होने वाला है किन्तु वह सभी बातों से परिचित नहीं थी । उसे केवल आने वाले सुख का अहसास था ।

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी ?

उत्तर–माँ नें बेटी को निम्नलिखित सीख दी–

कभी अपनी सुन्दरता और प्रशंसा पर मत रीझना
गहनों और कपड़ों के बदले अपनी आजादी मत खोना
त्यागी, सरल, भोली, स्नेही होना पर अत्याचार न सहना

2. माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ?

उत्तर–माँ चाहती थी कि उसकी बेटी लड़की होने पर बहू होने का हर फर्ज निभाए, पर साथ-साथ यह भी चाहती थी कि उसकी बेटी कोई अत्याचार न सहे और कोई उसका फायदा न उठाए इसलिए उसने कहा कि लड़की पर जैसी मत दिखाई देना ।

10. लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है ?

उत्तर–सभ्यता और संस्कृति की सही समझ इसलिए नहीं बन पाई क्योंकि हम इन दोनों बातों को एक ही समझते हैं। यह जानना जरूरी है कि दोनों एक नहीं हैं फिर भी इनमें इतनी नजदीकी है कि इनमें स्पष्ट अंतर सामान्य लोगों को नहीं समझ आते हैं ।

11. संस्कृति पाठ का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–संस्कृति पाठ का निम्नलिखित उद्देश्य है :

संस्कृति–असंस्कृति, सभ्यता–असभ्यता, जैसे शब्दों का सही अर्थ बताना ।

हिन्दू संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति जैसे विभाजनों की निन्दा करना ।

साम्यवादी विचारधाराओं को बढ़ावा देना ।

12. लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है ?

उत्तर–लेखक के अनुसार सभ्यता संस्कृति का परिणाम है। मनुष्य के खाने–पीने के तरीके पहनने ओढ़ने के तरीके हमारे यातायात के साधनों का उपयोग जीवन जीने का तरीका ही सभ्यता है ।

8. कन्यादान–ऋतुराज

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. माँ ने कहा पानी ने झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री–जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ।

1. लड़की होने से क्या आशय है ?

उत्तर–लड़की होने से आशय है, लड़की जैसे गुणों का होना मन से सरल, भोली, समर्पणशील होना।

2. माँ ने यह क्यों कहा कि ''आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं'' ?

उत्तर–माँ ने यह कहा क्योंकि उसके मन में वह पुरानी घटनाएँ मौजूद रही होंगी जिनमें घर की बहुओं को जलाकर मार डाला गया था। इसलिए वह अपनी बेटी को समझा दे रही है ।

3. लड़की जैसी दिखाई मत देना का क्या आशय है ?

उत्तर–लड़की जैसी दिखाई मत देना का आशय है कि अपने ऊपर किए जाने वाले अत्याचार को मत सहना । अपना शोषण मत होने देना ।

4. किस संस्कृति को कूड़े-करकट का ढेर कहा गया है ? और क्यों ?

उत्तर–उस संस्कृति को कूडे-करकट का ढेर कहा गया है जिसमें जातिवाद ऊँच-नीच, छुआछूत अमीर-गरीब, अनेक रूढ़ियों अंधविश्वास, धार्मिक कर्मकांड, परम्पराएँ आदर्श और जीवन मूल्य कुरीतियाँ सम्मिलित है । क्योंकि परिवर्तित समय में इनका कोई अर्थ नहीं रह गया है।

5. सिद्धार्थ ने अपना घर क्यों त्याग दिया ?

उत्तर–आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपने घर का त्याग किसी तृष्णा के वशीभूत लड़ती कटती मानवता सुख से रह सके। इसके लिए उन्होंने कठोर तपस्या की और सत्य की खोज भी की ।

6. संस्कृति निबंध का प्रतिपाद्य/उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–संस्कृति निबंध का उद्देश्य सभ्यता और संस्कृति शब्दों की व्याख्या करना है। सभ्यता और संस्कृति शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना तथा मानव संस्कृति को अविभाज्य बताकर उसे मनुष्य के लिए कल्याणकारी बताना है।

7. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहते हैं ?

उत्तर–अपनी बुद्धि अथवा विवेक के आधार पर किसी भी नए तथ्य का दर्शन करनेवाला व्यक्ति वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' है। उदाहरणतया न्यूटन संस्कृत मनुष्य है, क्योंकि उसने अपनी बुद्धि के बल पर गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त खोजा ।

8. किन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूई-धागा का आविष्कार हुआ होगा ?

उत्तर–निम्नलिखित महत्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूई-धागा का आविष्कार हुआ होगा

तन ढकने के लिए ।

शीत तथा उष्णता से बचने के लिए ।

शरीर सजाने की प्रवृति के कारण ।

आज कल यह तकनीक बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही है। जूते सिलने से लेकर शल्य चिकित्सा तक इसका उपयोग हो रहा है ।

9. लेखक ने सर्वस्व त्याग करने वाली संस्कृति को स्पष्ट करने के लिए किन-किन महामानवों के उदाहरण दिए हैं ?

उत्तर–निम्नलिखित महामानवों के उदाहरण दिए हैं–

रूस के भाग्य विधाता लेनिन द्वारा डैस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़ों को स्वयं न खाकर दूसरों को खिला देने का उदाहरण ।

संसार भर के मजदूरों को सुखी देखने की इच्छा में स्वयं के जीवन को कष्टपूर्ण बनाने वाले कार्ल मार्क्स का उदाहण ।

दुखी मानवता को सुखी करने की इच्छा से सिद्धार्थ द्वारा गृह त्याग देने का उदाहरण ।

1. मानव के द्वारा की गई कौन-सी खोज भूख मिटाने के साथ जुड़ी हुई हो सकती है ?

(क) भवन निर्माण (ख) चिकित्सा सेवा

(ग) आग का आविष्कार (घ) बर्तन बनाना

2. सर्दी गर्मी से बचने के लिए आविष्कार किया गया होगा ?

(क) तरह तरह के वस्त्र (ख) सूई-धागा

(ग) सिलाई मशीन (घ) भवन निर्माण

3. मोती भरा थाल से तात्पर्य है :

(क) तारों भरा रात्रि का आसमान (ख) मोतियों से भरी थाली

(ग) चमकीले दाँतों से युक्त मुँह (घ) तालाब पर गिरती बरसात की बूँदें

4. मनुष्य रात को खुले आसमान के नीचे सो क्यों नहीं पाता ?

(क) उसे नींद नहीं आती (ख) वह आसमान से रहस्यों को समझना चाहता है

(ग) उसे तारे आकृष्ट करते हैं (घ) वह तारों की धरती पर लाना चाहता है

5. आदमी सोने के लिए कहाँ लेटा था ?

(क) छत के नीचे (ख) खुले आकाश के नीचे

(ग) छत के ऊपर (घ) खुले बरामदे में

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संसार में किसी भी चीज को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता क्यों ?

उत्तर–प्रतिक्षण बदलते संसार में कोई भी वस्तु स्थायी अथवा अक्षुण्ण नहीं है। समय परिवर्तन के साथ-साथ उनमें बदलनाव आता रहता है और आना भी चाहिए। इसलिए संसार में किसी भी चीज को पकड़कर नहीं बैठा जा सकता ।

2. आशय स्पष्ट कीजिए–'जिन साधनों के बल पर वह दिन रात आत्म विनाश में जुटा हुआ है उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ।'

उत्तर–मनुष्य ने अपनी योग्यता, प्रवृति अथवा प्रेरणा के द्वारा अपने आत्म विनाश के अनेक साधन जुट लिए हैं और वह ऐसे अन्य साधनों को जुटाने के दिन रात लगा हआ हैं लेखक प्रश्न करता है कि उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? वास्तव में हमें यह उनकी असभ्यता ही समझनी चाहिए क्योंकि उनमें मानव कल्याण की अपेक्षा मानव के अहित की भावना कार्यरत है ।

3. लेखक के अनुसार सभ्यता और संस्कृति में क्या अन्तर है ?

उत्तर–लेखक के अनुसार व्यक्ति की वह योग्यता प्रवृति अथवा प्रेरणा संस्कृति है जिसके बल पर वह आविष्कार करता है जबकि उसके द्वारा अपने लिए तथा दूसरों के लिए किया गया आविष्कार सभ्यता है।

(स) भौतिक प्रेरणा, ज्ञानप्सा क्या ये दोनों ही मानव संस्कृति के माता-पिता हैं ? दूसरे के मुँह में कौर डालने के लिए जो अपने मुँह का कौर छोड़ देता है, उसको यह बात क्यों और कैसे सूझती है ? रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए माता बैठी रहती है, वह आखिर ऐसा क्यों करती है? सुनते हैं कि रूस का भाग्यविधाता लेनिन अपनी डेस्क में रखे हुए डबल रोटी के सूखे टुकड़े स्वयं न खाकर दूसरों को खिला दिया करता था। वह आखिर ऐसा क्यों करता था ? संसार के मजदूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया और इन सबसे बढ़कर आज नहीं आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती कटती मानवता सुा से रह सके।

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

(क) संस्कृति (ख) बालगोबिन भगत

(ग) नौबत खाने में इबादत (घ) लखनवी अंदाज

2. मानव संस्कृति के माता-पिता हैं :

(क) सभ्यता और संस्कृति (ख) भौतिक प्रेरणा और ज्ञानप्सा

(ग) मानव सभ्यता (घ) मानव और संस्कृति

3. रूस का भाग्य विधाता था :

(क) स्टालिन (ख) बिस्मार्क

(ग) लेनिन (घ) मुसोलिनी

4. न्यूटन ने आविष्कार किया :

(क) गुरुत्वाकर्षण का (ख) टेलीविजन का

(ग) रेडियो का (घ) इंटरनेट का

5. मजदूरों को सुखी देखने के लिए किसने अपना जीवन दु:ख में बिता दिया ?

(क) कार्ल मार्क्स ने (ख) गोपालन रेड्डी ने

(ग) स्टालिन ने (घ) लेनिन ने

उत्तर–1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (क)

(द) आग के आविष्कार में कदाचित् पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सूई धागों के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढका है, लेकिन न वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है तो उसकी केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर वह मोती भरा थाल क्या है ?

4. भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को :

(क) संस्कृत कह सकते हैं (ख) सभ्य कह सकते हैं

(ग) संस्कृति पुरुष कहलाते हैं (घ) सभ्यता के लिए घातक कहलाते हैं

5. वह व्यक्ति संस्कृत हो सकता है जो :

(क) किसी सिद्धान्त का आविष्कार करता है (ख) जो सिद्धान्त का अनुकरण करता है

(ग) जो सभ्यता की व्याख्या करता है (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–1. (घ) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख) 5. (क)

(ब) और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम । हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने के तरीके, हमारे गमन के साधन, हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके, सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्मा विनाश के साधनों को आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्य ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा ?

1. गद्यांश के पाठ का नाम है :

(क) संस्कार (ख) सुख-सम्पत्ति

(ग) संगम (घ) संस्कृति

2. संस्कृति का परिणाम है :

(क) संस्कृति (ख) सभ्यता

(ग) कार्य (घ) खाना-पीना

3. संस्कृति असंस्कृति कब बन जाएगी ?

(क) जब सभ्यता बन जाएगी (ख) जब काम करने की भावना नष्ट हो जाएगी

(ग) जब साधनों का आविष्कार होगा (घ) जब कल्याण की भावना नष्ट हो जाएगी

4. संस्कृति का संबंध है :

(क) संस्कृत विषय से (ख) याद करने से

(ग) कल्याण की भावना से (घ) ज्ञान की भावना से

5. असंस्कृति जननी है :

(क) असभ्यता की (ख) अनभिज्ञता की

(ग) अनुशासन की (घ) अपनेपन की

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

12. बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में क्या-क्या समाया हुआ है ?

उत्तर–बिस्मल्ला खाँ की शहनाई में संगीत के सातों सुर, स्वयं परवरदिगार, गंगा माँ तथा उनके उस्ताद की नसीहतें समाई हुई हैं।

13. काशी में हो रहे कौन-कौन से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे ?

उत्तर–काशी में हो रहे निम्नलिखित परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे–

संगीत साहित्य और अदब की बहुत सी परम्पराओं का लुप्त होना।

खान पान संबंधी पुरानी चीजें न मिलना।

गायकों के मन में संगतियों के प्रति आदर न रहना ।

गायक द्वारा रियाज करने में कमी ।

साम्प्रदायिक सद्भाव का कम होना ।

17. संस्कृति–भदं आनन्द कोसल्यायन

निम्नलिखित गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर दीजिए ।

(अ) एक संस्कृत व्यकित किसी नयी चीज की खोज करता है। किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक में किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही, लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सके, पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?

(क) एक कहानी यह भी (ख) नौबतखाने में इबादत

(ग) बालगोबिन भगत (घ) संस्कृति

2. 'पूर्वज' का अर्थ है :

(क) जो पहले पैदा हुआ हो (ख) जिसका जन्म नहीं हुआ

(ग) जिसका अभी-अभी जन्म हुआ (घ) जो विद्वान कहलाता है

3. गुरुत्वाकर्षण का आविष्कार किसने किया ?

(क) मुसोलिनी ने (ख) न्यूटन ने

(ग) बिस्मार्क ने (घ) कार्ल मार्क्स ने

5. बिस्मिल्ला खां के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया ?

उत्तर–हमें बिस्मिल्ला खां के व्यक्तित्व की सादगी, फकीरी स्वभाव, स्वाभिमान तथा कला के प्रति उनकी अनन्य भक्ति और समर्पण ने प्रभावित किया है। वे अपने जीवन में अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित होते हुए भी किसी धर्म और जाति की संकीर्णताओं में नहीं बँधे। सच्चे मुसलमान होते हुए भी काशी के बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति श्रद्धा रखना उनका व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता है। भारत रत्न जैसी सम्मानीय उपाधि मिलने उके बाद भी उनके आगन्तुकों से मिलते थे यह उनके व्यक्तित्व की सादगी और फकीराना स्वभाव का ही परिचय है।

6. काशी में सब कुछ एकाकार कैसे हो गया है ?

उत्तर–काशी में संगीत भक्ति से, भक्ति कलाकार से, कजरी चैती से, विश्वनाथ विशालक्षी से और बिस्मिल्ला खां गंगाद्वार से मिलकर एक हो गए हैं। इन्हें अलग-अलग करके देखना संभव नहीं है।

7. शहनाई की दुनिया में डुमरांव को क्यों याद किया जाता है ?

उत्तर–1. डुमरांव गांव की सोन नदी के किनारों पर पाई जानेवाली बनावट नरकट घास से शहनाई की रीड बनती है ।

2. प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खां की जन्मस्थली डुमरांव गांव ही है ।

3. बिस्मिल्ला खाँ के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के ही निवासी थे। इन्हीं कारणों से शहनाई की दुनियाँ में डुमराँव को याद किया जाता है ।

8. सुषिर वाद्यों से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर–सुषिर वाद्यों से अभिप्राय है–फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य । जैसे–शहनाई, बीन, बाँसुरी आदि ।

9. शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई होगी ?

उत्तर–शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि देने के कारण निम्नलिखित रहे होंगे–

फूँककर बजाए जाने वाले वाद्यों में शहनाई सबसे अधिक सुरीली है ।

मंगलिक विधि-विधानों में इसका उपयोग होता है ।

10. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?

उत्तर–बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक निम्नलिखित कारणों से कहा गया है–

अपना सानी न रखने के कारण ।

मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करवाने वाले होने के कारण ।

11. बिस्मिल्ला खाँ की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए ।

उत्तर–ईश्वर में आस्था कला प्रेमी भावुक

सादा जीवन उच्च विचार वाले संगीत प्रेमी लगनशील, मानव प्रेमी

4. बिस्मिल्ला खां नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हुए क्या मांगते थे ?

(क) मिठास भरी आवाज (ख) सुर

(ग) सोज (घ) तान

5. सुरों के प्रभाव से बिस्मिल्ला खां आँखों से कैसे आँसू निकलने की प्रार्थना करते थे ?

(क) अनगढ़ (ख) मोटे-मोटे

(ग) मोती की तरह (घ) वर्षा की बूँटों की तरह

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ग)

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी कैसे है ?

उत्तर–शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता है। रीड 'नरकट' नामक एक घास से बनाई जाती है जो मुख्य रूप से डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी के कारण शहनाई जैसा वाद्य बजता है।

2. संगीत में सम का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि बिस्मिल्ला खां को सम की समझ कब और कैसे आ गई थी ?

उत्तर–संगीत में सम का आशय है संगीत का वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरांभ होता है। बिस्मिल्ला खां में सम की समझ बचपन में ही आ गई थी। जब वह अपने मामा अलीबख्श खाँ को शहनाई बजाते हुए सम पर आते सुनता तो धड़ से पत्थर जमीन पर मारकर दाद देता था।

3. काशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा जाता है ?

उत्तर–काशी संस्कृति की पाठशाला है यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है कला शिरोमणि यहाँ रहते हैं। यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है। यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है, यहाँ प्रकाण्ड ज्ञाता धर्म गुरु और कलाप्रेमियों का निवास है ।

4. बिस्मिल्ला खां दो कौमों में भाईचारे की प्रेरणा कैसे देते रहे ?

उत्तर–बिस्मिल्ला खां जाति से मुसलमान थे और धर्म की दृष्टि से इस्लाम धर्म को भजने वाले पाँच वक्त नमाज पढ़ने वाले सच्चे मुसलमान। मुहर्रम से उनका विशेष जुड़ाव था। वे बिना किसी भेदभाव के हिन्दू, मुसलमान, दोनों के उत्सवों में मंगल ध्वनि बजाते थे। उनके मन में बालाजी के प्रति विशेष श्रद्धा थी। वे काशी से बाहर होने पर भी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई बजाते थे। इस प्रकार वे दो कौमों को एक होने आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे ।

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खां के बचपन का क्या नाम था ?

(क) जलालुद्दीन (ख) अमीरूद्दीन

(ग) अजहरूद्दीन (घ) सोहरबुद्दीन

2. उस्ताद बिस्मिल्ला खां किस मंदिर में रियाज के लिए जाते थे ?

(क) बालाजी का मंदिर (ख) भैरवजी का मंदिर

(ग) वैष्णवजी का मन्दिर (घ) सूर्यदेव का मन्दिर

3. बालाजी का मंदिर जाने का रास्ता किसके यहाँ से होकर गुजरता था ?

(क) बतूलन बाई एवं झूलन बाई (ख) रसूलन बाई और बतूलन बाई

(ग) उतरन बाई एवं जोहराबाई (घ) सूलनबाई और बतूलन बाई

4. रसूलन बाई एवं बतूलन बाई कौन थी ?

(क) फिल्मी नायिका (ख) नृत्यांगना

(ग) गायिका (घ) साध्वी

5. अमीरूद्दीन अपने जीवन में संगत का प्रथम प्रेरक किसको मानते हैं ?

(क) उस्ताद अब्दुल अहमद को (ख) रसूलन बाई एवं बतुलन बाई

(ग) जोहराबाई को (घ) अफलाबाई एवं जफलाबाई को

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)

(द) शहनाई के इसी मंगल ध्वनि के नायक उस्ताद बिस्मिल्ला खां साहब अस्सी बरस से सुर मांग रहे थे। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त बालगी नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थी। लाखों सजदें इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते थे। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते थे–''मेरे मालिक सुर बख्श दे । सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आए ।''

1. शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक थे :

(क) सादिक हुसैन (ख) अलीबख्श

(ग) शम्सुद्दीन (घ) बिस्मिल्ला खां

2. पाँचों वक्त की नमाज किसे पाने में खर्च हो जाती थी ?

(क) तान (ख) सुर

(ग) ध्वनि (घ) आवाज

3. नायक शहनाईवादक किसके सामने झुककर सच्चे सुर की इबादत करते थे ?

(क) पीर (ख) खुदा

(ग) उस्ताद (घ) अब्बा

जनसमूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं इनके अपने उत्सव हैं अपना सेहरा बनना और अपना नौहा । आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते ।

1. काशी किसकी पाठशाला है ?

(क) संस्कृति की (ख) शिक्षा की

(ग) विज्ञान की (घ) राजनीति की

2. शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रसिद्ध है ?

(क) आनन्द कानन (ख) अभ्यारण्य

(ग) नंदन कानन (घ) वृन्दावन

3. काशी में कितने सालों का इतिहास है ?

(क) सैकड़ों (ख) हजारों

(ग) लाखों (घ) करोड़ों

4. काशी का जनसमूह कैसा है ?

(क) रसिकों से उपकृत (ख) रसहीन

(ग) अज्ञानी (घ) नास्तिक

5. बिस्मिल्ला खां को किससे अलग करके नहीं देखा जा सकता है ?

(क) गंगा द्वार से (ख) भक्ति से

(ग) धर्म से (घ) चैती से

उत्तर–1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

(स) अमीरूद्दीन की उम्र अभी 14 साल है। मसलन बिस्मिल्ला खां की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बालाजी का मन्दिर जहाँ बिस्मिल्ला खां को नौबतखाने रियाज के लिए जाना पड़ता है। मगर एक रास्ता है बालाजी मन्दिर तक जाने का। वह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता हैं इस रास्ते से अमीरूद्दीन को जाना अच्छा लगता है। इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल बनाव कभी ठुमरी, कभी अप्पे, कभी दादरा के मार्फत ड्योढी तक पहुँचते रहते हैं। रसूलन बाई और बूलिन बाई जब गाती है तब अमीरूद्दीन को खुशी मिलती है। अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली है। एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलन बाई और बतूलन बाई ने उकेरी है।

16. नौबतखाने में इबादत–यतीन्द्र मिश्र

निम्नलिखित गद्यांश में से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(अ) सचमुच हैरान करती है काशी-पक्कामहल जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की शान्ति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक दूसरे के पूरक रहे हैं । उसी तरह मुहर्रम ताजिया और होली अबीर, गुलाल की गंगा जमुना संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खां जैसा लय और सुर की तमीज सिखानेवाला नायाब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

1. इस गद्यांश में किस संगीत वादक का जिक्र है :

(क) उस्ताद बिस्मिल्ला खां (ख) पंडित जसराज

(ग) उस्ताद इंशा अल्ला खां (घ) भीमसेन

2. बाबा विश्वनाथ की नगरी मानी जाती है ।

(क) मथुरा (ख) वृन्दावन

(ग) काशी (घ) द्वारका

3. गंगा जमुनी संस्कृति का क्या आशय है :

(क) बेमेल संस्कृति (ख) निज संस्कृति

(ग) उच्च संस्कृति (घ) मिली-जुली संस्कृति

4. काशी में मरण को कैसा माना गया है ?

(क) मंगल (ख) अमंगल

(ग) धनदायक (घ) अपवित्र

5. उस्ताद बिस्मिल्ला खां को किसके समान बताया गया है ?

(क) सुनहरे क्षितिज के समा (ख) नायाब हीरे के समान

(ग) चमकती किरण के समान (घ) सुन्दर रोशनी के समान

उत्तर–1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख)

(ब) काशी संस्कृति की पाठशाला है । शास्त्रों में आनन्दकानन के नाम से प्रतिष्ठित । काशी में कलाध र हनुमान व नृत्व विचारधारा है, बड़े रादास जी हैं, मौजुबुीन खाँ हैं व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार

6. रौद्र रस

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे ।
सब शील अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे ।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े ।
करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े ।

7. वीभत्स रस

कोउ अँतड़िन को पटिरि माल इतरात दिखावत ।
काउ चरवी लै चोप सहित निज अंगनि लावत ।

8. भयानक रस

शंका, चिन्ता मोट, आवेग, त्रास, दीनता आदि ।
इत सुरसरि को धाम धमकि त्रिभुवन मय पागे
सकल सुरासुर निकल बिलोकन आतुर लागें ।

9. शांत रस

मैं समझयों निरधार, यह जब काचों काँच सो ।
एक रूप अपार प्रतिबिंबित लखियत जहाँ ।।–बिहारी

10. वात्सल्य रस

मैया मोरि मैं नहि माखन खायो
ग्वाल-बाल सब मेरे देरे पेरे है बरबस मुख लपटायौ । –सूरदास

स्थायी भावों की संख्या नौ है तथा इनके अनुसार ही रसों की संख्या भी नौ है ।

स्थायी भाव	**रस**
1. रति	श्रृंगार
2. हास	हास्य
3. शोक	करुणा
4. क्रोध	रौद्र
5. उत्साह	वीर
6. भय	भयानक
7. जुगुप्सा	वीभत्स
8. विस्मय	अद्‌भुत
9. निर्वेद	शांत

2. विभाव (क) आलम्बन (ख) उद्दीपन

3. अनुभाव

4. संचारी भाव

रसों का परिचय

1. शृंगार रस–(क) संयोग (ख) वियोग

(क) संयोग उदाहरण–कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात ।

भरे भौन में करत हैं नैनन ही सो बात ।।

(ख) वियोग : नयनों को रोने दे, मन ! तू संकीर्ण न बन प्रिय बैठे हैं आँखों से ओझल हो गये नहीं वे कहीं यहीं बैठे हैं ।

2. रस

''आज काल के भी विरुद्ध है

युद्ध-युद्ध बस मेरा युद्धा है–मै. श. गुप्ता

करुण रस

3. लोटते थे भरत सुध-हीन,

पितृ–चिता के पाठ तल में लीन । मै. श. गुप्ता

4. अद्‌भुत रस

यह देख, गगन मुझमें लय है,

यह देख पवन मुझमें लय है,

मुझमें विलीन झंकार सकल,

मुझमें लय है, संसार सकल ।

अमरत्व फूलता है मुझ में

संहार झूलता है मुझमें । – रा. सि. दिनकर

5. हास्य रस

तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेम प्रताप,

साज मिले पन्द्रह मिनट, घंटा भर आलाप ।

घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता,

धीरे-धीरे खिसक चुके थे सारे श्रोता ।

कह काका सम्मेलन में सन्नाटा छाया,

श्रोताओं में केवल हमको बैठा पाया ।

(द)निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाले वाक्य छाँटिए :

1. (क) लड़कों के द्वारा खूब पढ़ा गया ।
   (ख) मोहन ने खाना खाया ।
   (ग) मुझसे रोया नहीं गया।
   (घ) तुम यहाँ बैठो ।
2. (क) हलवाई द्वारा मिठाई बनायी जाती है ।
   (ख) मैं नहीं आ सकता ।
   (ग) लता मंगेशकर मधुर गीत गाती हैं ।
   (घ) अजय से उठा नहीं जाता है ।
3. कर्मवाच्य छाँटिए :
   (क) रीमा चित्र बनाती है ।
   (ख) सौम्या सुबह नहीं उठ सकी ।
   (ग) सौम्या द्वारा कविता पढ़ी गई ।
   (घ) सौम्या घर गई ।
4. (क) आज मैच खेलेंगे ।
   (ख) तुम मैच नहीं खेल पाओगे ।
   (ग) बच्चा खूब रोया ।
   (घ) करीम द्वारा पतंग उड़ाई जा रही है ।

उत्तर-संकेत :

(अ) 1. (घ) 2. (ब) 1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) 5. (क) 6. (क)

(स) 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) (द) 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ)

अभ्यास-प्रश्न :

निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए :

1. शिकारियों द्वारा शिकार किया जाता है । (कर्तृवाच्य)
2. उसने दूध पी लिया । (कर्मवाच्य)
3. मेरी सास नहीं लड़ पाती । (भाववाच्य)
4. मुझसे वहाँ नहीं जाया जाएगा । (कर्तृवाच्य)

रस-4 अंक

रस काव्य की आत्मा है अर्थात् रसयुक्त रचना को काव्य कहते हैं । रस का अर्थ है आनन्द तात्पर्य कि जिस रचना को पढ़कर आनन्द प्राप्त हो वह काव्य है ।

रस की निष्पत्ति (अनुभूति) कैसे होती है, इस विषय में 'नाट्य शास्त्र' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता भरत मुनि ने कहा है–

निभावानुभावष्यमिचारि संयोगाद्रस–निष्पत्तिः ।

विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है ।

रस के उपकरण–

1. स्थायी भाव

(ब) वाच्य बताइए :

1. प्रधानमंत्री द्वारा भाषण दिया गया :

(क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

2. मीना उपन्यास पढ़ती है :

(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) भाववाच्य (घ) इनमें से कोई नहीं

3. माँ से चला भी नहीं जाता ।

(क) कर्मवाच्य (ख) भाववाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

4. सुमित्रा द्वारा पत्र पढ़ा गया

(क) कर्मवाच्य (ख) कर्तृवाच्य

(ग) भाववाच्य (घ) अन्य

5. भाववाच्य छाँटिए :

(क) रमा से सोया नहीं जाता । (ख) रमा सो नहीं सकती ।

(ग) रमा सो नहीं पाती । (घ) राम नहीं सो सकती ।

6. भाववाच्य छाँटिए :

(क) मुझसे पढ़ा नहीं जाता (ख) मैं पढ़ नही सकती

(ग) मैं पढ़ती नहीं हूँ । (घ) इनमें से कोई नहीं

(स) निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य वाले वाक्य छाँटिए :

1. (क) मुझसे पत्र नहीं लिखा गया (ख) हमसे इतने दुख नहीं सहे जाते ।

(ग) महात्मा गाँधी ने राष्ट्र को शान्ति और अहिंसा का संदेश दिया ।

(घ) इनमें से कोई नहीं

2. (क) मैं कविता पढ़ सकता हूँ । (ख) मीरा द्वारा कल पत्र लिखा जाएगा ।

(ग) बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता। (घ) इनमें से कोई नहीं ।

3. (क) रीमा से पुस्तक पढ़ी जा रही है । (ख) मुझसे उठा नहीं जाता ।

(ग) महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की । (घ) इनमें से कोई नहीं ।

4. (क) मुझसे हँसा नहीं गया । (ख) राम द्वारा पुस्तक लिखी जाती है ।

(ग) हम स्वामीजी को नहीं भूल सकते । (घ) इनमें से कोई नहीं

उदारहण–

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
छात्रों ने पत्र लिखा ।	छात्रों द्वारा पत्र लिखा गया ।
मोहन क्रिकेट नहीं खेलता है ।	मोहन से क्रिकेट नहीं खेला जाता है ।
यह कविता किसने लिखी है ?	यह कविता किसके द्वारा लिखी गई है ?
मैंने पत्र लिखा ।	मेरे द्वारा पत्र लिखा गया ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :

1. कर्ता के साथ 'से' या 'के' द्वारा लगाएँ ।

2. मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदल कर उसके साथ धातु के एकवचन, पुल्लिंग अन्य पुरुष का वही काल लगा दें, जो कर्तृवाच्य की क्रिया का है । जैसे–

खेलेंगे	खेला जाएगा
सोते हैं	सोया जाता है
खा रहे थे	खाया जा रहा था ।

उदाहरण–

कर्तृवाच्य	**भाववाच्य**
सीता सो गई ।	सीता से सोया गया ।
घायल बिस्तर से नहीं उठता ।	घायल से बिस्तर से उठा नहीं जाता ।
मैं चल नहीं सकता ।	मुझसे चला नहीं जाता ।
पक्षी उड़ेंगे ।	पक्षियों द्वारा उड़ा जाएगा ।

विशेष सामान्यतः भाववाच्य का प्रयोग निषेधात्मक अर्थ में होता है ।

प्रश्न :

(अ) सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1. जिस वाक्य में कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है, उसे कहते हैं :

(क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) साधारण वाच्य (घ) कर्तृवाच्य

2. जिस वाक्य में कर्म के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है, उसे कहते हैं :

(क) कर्मधारय (ख) भाववाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

6. मोहन से खाना नहीं खाया जाता । (कर्ता + से)–असमर्थता बताने के लिए 'नहीं' के साथ कर्मवाच्य का प्रयोग ।

विशेष–ध्यान देने योग्य बात यह है कि कर्मवाच्य में कर्ता का लोप होता है या कर्ता के साथ 'द्वारा' के 'द्वारा' या 'से' जोड़ा जाता है, इस कारण कर्ता गौण हो जाता है तथा उसमें सकर्मक क्रियाएँ प्रयुक्त होती है।

(ग) **भाववाच्य**–रचना के अन्तर्गत असमर्थता/विवशता सूचक वाक्य भी आते हैं, किन्तु इनमें 'द्वारा' के स्थान पर प्राय: 'से' परसर्ग का प्रयोग होता है। इसमें अकर्मक क्रिया प्रयुक्त होती है। एक से वाक्य केवल निषेधात्मक रूप में प्रयुक्त होते हैं और कर्ता की असमर्थता सूचित करते हैं।

पहचान–भाव प्रमुख, क्रिया एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष तथा सामान्य भूतकाल में ।

उदाहरण–

1. ब मुझसे नहीं चला जाएगा ।
2. गर्मियों में खूब नहाया जाता है ।
3. तुमसे खाना नहीं खाया जा रहा है ।
4. अब खेला जाए ।
5. थोड़ी देर सो लिया जाए ।

विशेष–हिन्दी में क्रिया का एक ऐसा रूप भी है, जो कर्मवाच्य की तरह प्रयोग होता है। यह सकर्मक क्रिया से बनता है । जिन्हें व्युत्पन्न अकर्मक कहते हैं जैसे–

(क) मेज टूट गई । (तोड़ना' सकर्मक क्रिया से–'टूटना' व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया)

(ख) दरवाजा खुल गया । ('खोलना' सकर्मक क्रिया से–'खुलना' व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया)

(ग) भोजन पक गया । ('पकाना' सकर्मक क्रिया से–'पकना' व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया)

भाववाच्य में वक्ता का 'कथन-बिन्दु' क्रिया से प्रकट होता है ।

वाच्य परिवर्तन–

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना–कर्तृवाच्य बनाते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए ।

1. कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का सामान्य भूतकाल में परिवर्तन ।
2. कर्ता के साथ 'द्वारा' 'के द्वारा' या 'से' लगाइए ।
3. क्रिया को परिवर्तित रूप के साथ काल, पुरुष, वचन तथा लिंग के अनुसार क्रिया का रूप जोड़िए ।
4. यदि कर्म के साथ विभक्ति लगी हो तो उसे हटा दीजिए ।

और अहिंसा की प्रतीक है। इस पर मंत्र लिखे होते हैं। ऐसी मान्यता है कि श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती है उसकी आत्मा की शान्ति के लिए शहर से बाहर किसी पवित्र स्थान पर 108 श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती है, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे स्वयं नष्ट हो जाती है। किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती है ।

FA-4

वाच्य-परिवर्तन

वाच्य–वाच्य उस रूप रचना को कहते हैं, जिससे यह पता चलता है कि क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता कर्म है अथवा भाव ।

हिन्दी में तीन मुख्य वाच्य हैं–

(क) कर्तृवाच्य–जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, उन्हें कर्तृवाच्य कहते हैं। इन वाक्यों में अकर्मक तथा सकर्मक दोनों क्रियाएँ हो सकती हैं। इनमें कर्ता प्रमुख होता है और कर्म गौण होता है।

पहचान–कर्ता प्रमुख, क्रिया कर्ता के अनुरूप, कर्ता प्रथम विभक्ति में ।

उदाहरण–लक्ष्य चित्र बना रहा है । (सकर्मक)

गीता पुस्तक पढ़ रही है । (सकर्मक)

राम ने मिठाई खरीदी । (सकर्मक)

पिताजी आ रहे हैं । (अकर्मक)

मोह सो रहा है । (अकर्मक)

(ख) कर्मवाच्य–जिन वाक्यों में कर्ता गौण अथवा कर्म प्रधान होता है, उन्हें कर्मवाच्य कहते हैं । कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। इस कारण वाक्य में कर्ता का लोप हो जाता है या कर्ता के साथ 'द्वारा' के द्वारा या 'से' का प्रयोग होता है ।

पहचान–कर्म प्रमुख, क्रिया कर्म के अनुरूप, कर्ता तृतीय विभक्ति में (से/द्वारा/ के द्वारा का प्रयोग)

उदाहरण–

1. छात्रों के द्वारा चित्र बनाए गए । (कर्ता + द्वारा)

2. परीक्षा में प्रश्न-पत्र बाँटे गए । (कर्ता का लोप)

3. गाएँ चराई जा रही है । (कर्ता का लोप)

4. बालक से पत्र लिखा जाता है । (कर्ता + से)

5. मुझसे यह दरवाजा नहीं खोला जाता । (कर्ता + से)–असमर्थता बताने के लिए 'नहीं' के साथ कर्मवाच्य का प्रयोग ।

3. ''कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती है ।'' इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता कि देश ही आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है ?

उत्तर–लेखिका ने यह कथन उन पहाड़ी श्रमिक महिलाओं के विषय में कहा है, जो पीठ पर बँधी डोका (बड़ी टोकरी) में अपने बच्चों को सम्भालते हुए कठोर श्रम करती है ऐसा ही दृश्य वह पलामू और गुमला के जंगलों में भी देख चुकी थी, जहाँ बच्चे को पीठ पर बाँधे पत्तों (तेंदू के) की तलाश में आदिवासी औरतें वन-वन डोलती फिरती है। उसे लगता है कि ये रम सुंदरियाँ 'बेस्ट एट रिपेइंग' है अर्थात् ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक लौटाती हैं । वास्तव में यह एक सत्य है कि हमारे ग्रामीण समाज में महिलाएँ बहुत कम लेकर समाज को बहुत अधिक लौटाती हैं। वे घर बार भी सम्भालती हैं बच्चों की देखभाल भी करती हैं और श्रम करके धनोपार्जन भी करती हैं। यह बात हमारे देश की आम जनता पर भी लागू होती है। जो श्रमिक कठोर परिश्रम करके सड़कों, पुलों रेलवे लाइनों का निर्माण करते हिम या खेतों में कड़ी मेहनत करके अन्न उपजाते हैं उन्हें बदले में बहुत कम मजदूरी या लाभ मिलता है। लेकिन उनका रम देश की प्रगति में बड़ा सहायक होता है हमारे देश की आम जनता बहुत कम पाकर भी देश की प्रगति ने अहम भूमिका निभाती है।

4. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ के किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है ? इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए ?

उत्तर–आज की पीढ़ी पहाड़ी स्थलों को अपना विहार स्थल बना रही है। वहाँ भोग के नए-नए साधन पैदा किये जा रहे हैं। इसलिए जहाँ एक ओर गन्दगी बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर तापमान में वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप पर्वत अपनी स्वाभाविक सुन्दरता खो रहे हैं। इसे रोकने में हमें सचेत होना चाहिए । हमें ऐसा कोई कार्य नहीं चाहिए जिससे पहाड़ों का प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो, गन्दगी फैले और तापमान में वृद्धि हो ।

5. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी ?

उत्तर–सिक्किम में एक का नाम है–'कवी-लोंग स्टॉक । कहा जाता है कि यहाँ गाइड फिल्म की शूटिंग हुई थी वहीं एक घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक है। इस स्थिति को देखकर लेखिका को लगता है कि धार्मिक आख्याओं, पाप-पुष्प और अन्धविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएँ हैं ।

6. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर–यहाँ पहाड़ी रास्तों पर कतार में लगी श्वेत पताकाएँ दिखाई देती हैं। ये सफेद बौद्ध पताकाएँ शान्ति

6. 'छाया' शबद किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है कवि ने उसे छूने के लिए क्यों मना किया है ?

उत्तर–'छाया' शब्द अतीत की दुविधापूर्ण या भ्रमपूर्ण स्थितियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। साथ ही अतीत की स्मृतियों के लिए भी छायाएँ वास्तविकता से दूर होती है इसके पीछे भागना दुख को बढ़ावा देना है ।

7. कविता में व्यक्त दुख के क्या कारण हैं ?

उत्तर–पुरानी खुशियों को याद कर वर्तमान को दुखी करना ।

वास्तविकता से मुख मोड़कर कल्पना में जीना ।

समय का सही उपयोग न जानना ।

वर्तमान जीवन के सुअवसरों का लाभ न उठाना ।

दुविधा और भ्रम की मृगतृष्णा में भटक कर दुविधाग्रस्त जीवन बिताना ।

3. साना साना हाथ जोड़ि.....मधु काकरिया ।

1. गनतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया ?

उत्तर–मेहनतकश का अर्थ है–'कड़ी मेहनत करने वाले । बादशाह का अर्थ है–मन की मर्जी के मालिक । गंतोक एक पर्वतीय स्थल है। पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहाँ स्थितियाँ बड़ी कठिन है । अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए लोगों की कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ के लोग इस मेहनत से घबराते नहीं और ऐसी कठिनाइयों के बीच भी मस्त रहते हैं। इसलिए गन्तोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया।

2. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्वपूर्ण जानकारी दी लिखिए ।

उत्तर–जितने नार्गे उस वाहन का गाइड-कम-ड्राइवर था, जिसके द्वारा लेखिका सिक्किम के यात्रा कर रही थी । जितेन एक समझदार और मानवीय संवेदना से युक्त व्यक्ति था। उसने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति व भौगोलिक स्थिति तथा जन जीवन के विषय में अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। उसने बताया कि सिक्किम बहुत ही खूबसूरत प्रदेश है और गन्तोक से युमथांग की 149 किलोमीटर की यात्रा में हिमालय की गहनतम घाटियों और फूलों से लदी वादियाँ देखने को मिलती हैं सिक्किम प्रदेश चीन की सीमा से सटा है। पहले यहाँ राजशाही थी। अब यह भारत का एक अंग है। सिक्किम के लोग अधिकतर बौद्धधर्म को मानते हैं और यदि किसी बुद्धिष्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शान्ति के लिए एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती है। किसी शुभ अवसर पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। वहाँ के लोग बड़े मेहनती हैं। इसलिए गन्तोक को मेहनतकश बादशाहों का नगर कहा जाता है और बच्चे को भी साथ रखती है। यहाँ की स्त्रियाँ चटक रंग कपड़े पहनना पसंद करती है। और उनका परम्परागत परिधान 'बोकू' है।

क्या हुआ जो खिला फूल रस बसंत जाने पर ?

जे न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण

छाया मत छूना ।

मन होगा दुख दूना

1. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर–भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा तत्सम शब्दावली है ।

2. कवि ने साहस को दुविधा हत क्यों कहा है ?

उत्तर–कवि ने साहस को दुविधा हत कहा है क्योंकि व्यक्ति का साहस आशंकाओं और दुविधाओं के चलते नष्ट हो गया है। उसे यह सूझता नहीं है कि जीवन में क्या करना है ।

प्रश्न-उत्तर :

1. कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है ?

उत्तर–कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात कही है क्योंकि वस्तुत: वर्तमान ही वास्तविक सत्य है। व्यक्ति को वर्तमान में ही जीना पड़ता है हम अपने वर्तमान से भाग नहीं सकते हैं। अतीत की मधुर यादें या भविष्य के मोहक सपने कुछ समय तक तो हमारा साथ दे सकते हैं पर अंतत: हमें यथार्थ के धरातल पर ही लौटना पड़ता है।

2. कवि ने यश, वैभव, मान आदि को किसके समान बताया है ?

उत्तर–कवि न यश, वैभव, मान आदि को भ्रमित करने वाली मृगतृष्णा के समान बताया है। मनुष्य यश वैभव मान सम्मान के लिए भागता रहता है, किन्तु वह केवल भ्रमित होकर भटकता ही रहता है।

3. कवि ने छाया छूने के लिए मना क्यों किया है ?

उत्तर–कवि ने छाया छूने के लिए मना किया है क्या ..... गया हूँ वह पुन: लूट कर आने वाला नहीं है अत: उसकी याद करने के बजाए हमें वर्तमान में अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । अतीत की याद हमें दु:ख ही देगी ।

4. ''देह सुखी हो पर मन के दु:ख का अंत नहीं'' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य चाहे कितनी ही भौतिक सुख-सुविधाएँ जोड़ लें पर इससे केवल इसकी देह ही सुखी होगी मन नहीं । मन में जो दु:ख मौजूद है वह इन कृत्रिम उपायों से मिटने वाला नहीं है।

5. कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

उत्तर–कवि का संदेश है कि वर्तमान में जीवन जीने की कला विकसित करना चाहिए । वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करना चाहिए । कल्पना लोक में विचरने से कोई लाभ नहीं ।

है। गेय पद है। उनकी भाषा में संस्कृत के द्वारा काव्य को कोमल और संगीतात्मक बनाने का प्रयास किया है। कोमल ध्वनियों का प्रयोग किया है ।

6. पदों के आधार पर लक्ष्मण व राम के स्वभाव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–काव्यांश के आधार पर राम विनयशील, कोमल, गुरुजनों का आदर करने वाले, वीर साहसी । लक्ष्मण–उग्र, उद्दण्ड, वीर, साहसी । भाषा में व्यंग्य का भाव, स्वभाव से निडर ।

7. किस कारण लक्ष्मण क्रोध को रोककर परशुराम के वचनों का पालन कर रहे थे ?

उत्तर–लक्ष्मण क्रोध को रोक कर परशुराम के वचनों को इसलिए सह रहे थे क्योंकि उनके कुल की परम्परा है । उनके यहाँ गाय, ब्राह्मण, हरिभक्त और देवताओं पर वीरता नहीं दिखाई जाती ।

7. छाया मत छूना–गिरिजा कुमार माथुर

निम्नलिखित काव्यांशों पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए ।

1. यश है या न वैभव है, मान है न सरमाया है
   जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया है
   प्रभुता का शरण बिम्ब केवल मृगतृष्णा है
   हर चन्द्रिका में छिपी रात एक कृष्णा है
   जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन
   छाया मत छूना ।

1. मृगतृष्णा का क्या अर्थ है ?

उत्तर–मृगतृष्णा का अर्थ है भ्रम, छलावा । मनुष्य जीवन भर वस्तुओं, मान सम्मान के पीछे दौड़ता फिरता है परन्तु उसके हाथ कुछ भी नहीं लगता ।

2. यथार्थ के पूजन का क्या अर्थ है ?

उत्तर–यथार्थ के पूजन का अर्थ अतीत और भविष्य के दुखों और सपनों से मुक्त होकर वर्तमान में जो कुछ भी है उसे स्वीकार करना ।

3. चन्द्रिका में छिपी रात कृष्णा है से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर–कवि कहना चाहता है कि सुख शाश्वत नहीं है वरन् प्रत्येक सुख का अंत निश्चित है और उसके साथ दु:ख भी बाँहों में बाँहें डाले चलता है ।

2. दुविधा हत साहस है दिखता है पंथ नहीं
   देह सुखी हो पर मन के दुख का अंत नहीं ।
   दुख है न खिला चाँद शरत रात आने पर

5. परशुराम को फरसा संभालते देखकर सभा और लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर–सारी सभा त्राहि-त्राहि के कोलाहल से गूँज उठी। लक्ष्मण परशुराम के प्रति अधिक क्रुद्ध और आक्रामक हो गए ।

6. लक्ष्मण की बढ़ती हुई उच्छृंखलता पर अब तक मौन रहे राम ने अंत में लक्ष्मण को क्यों रोक लिया ?

उत्तर–यद्यपि लक्ष्मण की उच्छृंखलता रघुवंश के अनुकूल नहीं थी फिर भी राम समझ रहे थे कि मुनिवर को हमारी वास्तविकता का ज्ञान हो जाए। परन्तु उपस्थिति लोगों की पुकार से स्थिति बिगड़ती देख उन्होंने लक्ष्मण को आँखों से संकेत को रोका ।

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

उत्तर–परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए–

1. सभी धनुष तो एक समान होते हैं, फिर इस धनुष पर इतना हो हल्ला क्यों ?
2. इस पुराने धनुष को तोड़ने पर हमें क्या मिलता है ?
3. राम के छूने भर से ही यह धनुष टूट गया, इसमें राम का क्या दोष ?

2. इस पाठ के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषता लिखिए ।

उत्तर–पाठ को पढ़कर हमें परशुराम के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषता पता लगता है ।

1. वे महाक्रोधी थे ।
2. वे बड़बोले तथा अपनी वीरता की डींग हांकने वाले थे ।
3. वे जल्द ही उत्तेजित हो जाते थे ।
4. उन्हें अपने पूर्व के कृत्यों का बड़ा घमंड था ।

3. ''सेवक सो जो करे सेवकाई'' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–इस पंक्ति का तात्पर्य हे कि सेवक वह है जो सेवा करता है । प्रस्तुत पद में इस पंक्ति को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। परशुराम कहते हैं कि शिव धनुष तोड़कर काम तो तुमने शत्रुओं जैसा किया है उस पर अपने आपको तुम मेरा दास कहते हो । यह दोहरा व्यवहार नहीं चलेगा।

4. लक्ष्मण ने वीर योद्धा की कौन-कौन सी विशेषताओं का उल्लेख किया है ?

उत्तर–लक्ष्मण द्वारा वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्रकाश डाला कि शूरवीर युद्धभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करता है। यह आत्मप्रशंसा नहीं करता, वह कर्म पर आधारित होता है। वीरता का परिचय देता है।

5. पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर–तुलसीदास रससिद्ध कवि थे, उनकी भाषा अवधी है । इसमें दोहा, चौपाई शैली को अपनाया गया

2. अनुप्रास अलंकार का उदाहरण छाँटकर लिखिए ।

उत्तर–काटी कुठार कठोरे

आगे अपराधी गुरुद्रोही

हृदय हसी मुनिहि हरियरे सूझ ।

3. विश्वामित्र मन ही मन क्यों मुस्कुरा रहे थे ?

उत्तर–परशुराम राम और लक्ष्मण को बालक ही समझ रहे थे । वह उनके पराक्रम से अपरिचित थे । उनकी इसी अज्ञानता पर विश्वामित्र को हँसी आ रही है ।

पद-6

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान बिदित संसारा ।

माता पितहि उरिन भये नीके । गुररिनु रहा सोचु बड़ जी के ।।

सो जनु महरेहि माथे काढ़ा । दिन चलि गए ब्याज बड़ बाढ़ा ।।

अब आनिअ व्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली ।।

सुनि कटु वचन कुठार सुधारा । हाय हाय बचौ नृपद्रोही ।।

मिले न कबहूँ सुभट रन गाढ़े । द्विजदेवता घरहि के बाढ़े ।।

अनुचित कहि सबुलोगु पुकारे । रघुपति सयनहि लखनहु नेवारे ।।

लखन उत्तर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु ।

बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुल भानु ।

1. लक्ष्मण जी ने परशुराम जी की प्रशंसा करते हुए क्या व्यंग्य किया ?

उत्तर–लक्ष्मण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आपके शील के बारे में कौन नहीं जानता कि आपका कितना अच्छा शील है, सारा संसार इसके बारे में जानता है ।

2. लक्ष्मण के अनुसार परशुराम माता-पिता के ऋण से कैसे मुक्त हुए ?

उत्तर–परशुराम अपने पितृहन्ता सहस्रबाहु की भुजाओं को काटकर पितृऋण से मुक्त हुए थे।

3. लक्ष्मण किस ऋण और ब्याज की बात कर रहे हैं ?

उत्तर–लक्ष्मण परशुराम के गुरु ऋण और उसके ब्याज की बात कर रहे हैं। उनके अनुसार परशुराम अपने गुरु शिव को प्रसन्न करना चाहते हैं इसलिए शिव धनुष तोड़ने वाले का वध करना चाहते हैं ।

4. लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने क्या प्रतिक्रिया की ?

उत्तर–लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने तुरंत अपना फरसा संभाल लिया और क्रोधित और आक्रामक मुद्रा में खड़े हो गए ।

4. परशुराम ने लक्ष्मण को धमकाते हुए क्या कहा ?

उत्तर–लक्ष्मण को धमकाते हुए कहा कि मैं निरा मुनि नहीं हूँ। मैंने अनेक बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन किया है। मैं सहस्रबाहु से लोहा लेने में समर्थ हूँ। तुम्हें बालक समझकर छोड़ा रहा हूँ।

5. काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार लिखिए ।

उत्तर–अलंकार–अनुप्रास, अतिशयोक्ति ।

पद-3

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महामद मानी ।

पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ।।

इहा कुम्हड़बतिया कोऊ नाही । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ।।

देखि कुठारू सरासन बाना । मँकुछु कहा सहित अभिमाना ।।

भृगुसुत समुझि जनेऊ बिलोकी । जो कछु कहतु सहौ रिस रोकी ।।

सुर महिसुर हरिजन अरू गाई । हमरे कुल इन्ह पर न सुराई ।

बधों पापु अपकीरति हारें । मारतहूं पा परिअ तुम्हारे ।

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा । व्यर्थ धहु धनु बान कुठारा ।।

जो बिलोकि अनुचित कहुऊँ छमहु महामुनि धीर ।

सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गंभीर ।।

1. कुम्हड़बतिया कोउ नाही कहकर लक्ष्मण क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर–लक्ष्मण कहना चाहते हैं कि हम कमजोर या कायर नहीं हैं कि आपके इस क्रोध से डर जाएँगे ।

2. 'पुनि-पुनि' में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर–पुनुरूक्ति प्रकाश अलंकार ।

3. लक्ष्माण ने मुनि से कठोर वचन क्या सोचकर कहे थे ?

उत्तर–लक्ष्मण ने परशुराम के हाथ में कुल्हाड़ा और कंधों पर धनुष बाण देखकर सोचा कि ये कोई वीर योद्धा होंगे अत: यही सोचकर लक्ष्मण ने मुनि से कठोर वचन कहे थे ।

पद-4

कौसिक कहा छमिअ.....न बूझ अबूझ ।

1. पद में प्रयुक्त मुहावरा छाँटकर लिखिए ।

उत्तर–हरा ही हरा सूझना अर्थात् सभी कुछ आसान लगना (मुनिहि हरियरे सूझ)

धनुही सम त्रिपुरारिधनु, बिदित सकल संसार ।।

1. पद की भाषा और छंद के नाम लिखिए ।

उत्तर–अवधी भाषा तथा दोहा और चौपाई छंद ।

2. राम, लक्ष्मण और परशुराम के वचनों में कैसे मनोभाव है ?

उत्तर–राम के वचनों में विनम्रता

लक्ष्मण के वचनों में व्यंग्य

परशुराम के वचनों में क्रोध ।

3. सेवक का क्या गुण होता है ? क्या परशुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक थे ?

उत्तर–सेवक का गुण होता है सेवा करना । परशुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक नहीं थे क्योंकि उन्होंने शिव का धनुष तोड़कर शत्रुओं जैसा व्यवहार किया है ।

पद-2

लखन कहा हसि हमरे जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ।।

का छति लाभु जून धनु तोरे । देखा राम नयन के भोरे ।।

छुअत टुट रघुपतिहु न दोसू । मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू ।।

बोले चितै परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ।।

बालकु बोलि बधौ नहि तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ।।

बाल ब्रह्मचारी अति कोही । विश्वविदित क्षतियकुल द्रोही ।।

सहसबाहुभुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ।।

मातु पितहि जनि सोचबस बरसि महीसकिसोर ।।

गर्भगृह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ।।

1. कवि व कविता का नाम लिखिए ।

उत्तर–तुलसीदास । राम-लक्ष्मण, परशुराम-संवाद ।

2. लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के क्या-क्या तर्क दिए ?

उत्तर–लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि हमारी दृष्टि में सभी धनुष एक समान है। शिव धनुष पुराना था, इसके टूट जाने से क्या लाभ-हानि हो सकती है, राम ने मात्र छुआ ही था। अतः उनका क्या दोष ।

3. काव्यांश में परशुराम ने अपने विषय में क्या-क्या कहा ?

उत्तर–परशुराम ने कहा मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ, महाक्रोधी हूँ, क्षत्रिय कुल संहारक हूँ ।

4. प्राकृत उस समय आज की हिन्दी, बंगला आदि भाषाओं की तरह ही जनता की भाषा थी । अत: स्त्रियों द्वारा प्राकृत में बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं है ।

9. परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री पुरुष समानता को बढ़ाते हों–तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

उत्तर–परंपरा का जो भाग सड़-गल चुका है, जिसका अब कोई अर्थ नहीं रह गया अथवा जो मान्यता परंपरा आधुनिक युग में निरर्थक हो गई है, उन्हें रूढ़ि मानकर छोड़ देना चाहिए। हमें परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार करना चाहिए जो स्त्री पुरुष समानता में वृद्धि करते हैं ।

10. द्विवेदी जी ने किस आधार पर रूक्मिणी को अपढ़ और गँवार नहीं माना ?

उत्तर–द्विवेदी जी ने श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के उत्तरार्द्ध के तिरपनवें अध्याय की रूक्मिनी-हरण की कथा में रूक्मिणी द्वारा श्रीकृष्ण को लिखे गए लंबे चौड़े प्रेम-पत्र के आधार पर उसे अपढ़ और गँवार नहीं माना है। इस प्रेम-पत्र में रूक्मिणी का जो पांडित्य दिखाया हे वह उसके सुशिक्षित होने का प्रमाण है। यह पत्र प्राकृत में नहीं संस्कृत में लिखा गया है ।

11. 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर–इस पाठ का उद्देश्य पुरातनपंथियों के स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कें का जोरदार खंडन करते हुए स्त्री शिक्षा का समर्थन करना है। लेखक ने स्त्री शिक्षा को व्यर्थ अथवा समाज के विघटन का कारण मानने वाले पुरातन पंथियों के रूढ़िग्रस्त विचारों और कुतर्कों का अपने सटीक तर्कों के द्वारा खंडन किया हे तथा स्त्री शिक्षा के समर्थन में इतिहास प्राचीन ग्रन्थों से उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं । परंपरा का जो हिस्सा सड़-गल चुका है, उसे रूढ़ि मानकर छोड़ देने की बात पर बल दिया है ।

2. पद–तुलसीदास

पद-1

नाथ संभुनाथ भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ।।
आयेसु कहा कहिअ किन मोही । सुनि रिसाई बोले मुनि कोही ।।
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरिकरनी करि करिअ लराई ।।
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ।।
सो बिलगाउ बिहाड़ समाजा । न तो मारे जैहहिं सब राजा ।।
सुनि मुनिवचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अवमाने ।।
बहु धनुही तोरी लरिकाई कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई ।।
येहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाई कह भृगुकुलकेतू ।।
रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न संभार ।।

में बाधा नहीं, विकास होगा। कोई भी पढ़ी-लिखी स्त्री समाज की उन्नति में बेहतर सक्रिय भूमिका निभाएगी । उसे बाधक समझना ही संकीर्ण दृष्टिकोण या स्वार्थ हो सकता है। साक्षर स्त्री तो आने वाली पीढ़ी का अच्छी तरह मार्ग दर्शन कर सकती है ।

6. स्त्री-शिक्षा का विरोध करने वाले कौन-कौन से कुतर्क देते हैं ?

उत्तर–1. हमारे इतिहास-पुराणादि में स्त्रियों के पढ़ाने का नियमबद्ध प्रणाली नहीं मिलती, जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय स्त्रियों को पढ़ाने की चाल नहीं थी ।

2. पुराने संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियाँ भी अपढों की भाषा में बातें करती थीं ।

3. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होता है । शकुन्तला द्वारा दुष्यन्त को कटु वचन कहना पढ़ाई का ही दुष्परिणाम था ।

4. शकुन्तला द्वारा रचा गया श्लोक अपढों की भाषा का था, अत: स्त्रियों को तो अपढ़ गँवारों की भाषा पढ़ाना भी उन्हें बर्बाद करना है ।

7. कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे । द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है ?

उत्तर–द्विवेदी जी ने निम्नलिखित तर्क देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया–

1. नाटकों में स्त्रियों द्वारा प्राकृत बोलना तथा संस्कृत न बोल पाना उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। प्राकृत उस समय की प्रचलित भाषा थी। बौद्ध और जैन ग्रन्थ प्राकृत में ही लिखे गए हैं। गाथा-सप्तशती, सेतुबंध महाकाव्य प्राकृत में लिखे गए हैं ।

2. द्विवेदी जी ने दूसरा तर्क देते हुए कहा कि दुष्यन्त के प्रति शकुन्तला के कटु वचन उसकी शिक्षा के कारण नहीं है, बल्कि अपमानित स्त्री के हृदय से निकला स्वाभाविक क्रोध है ।

3. पढ़ने में अनर्थ का बीज बिल्कुल नहीं है। अनर्थ तो पढ़ने-लिखने तथा अनपढ़ों दोनों से ही हो जाते हैं स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

8. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अपढ़ होने का सबूत है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं है । क्योंकि–

1. प्राकृत उस समय जनसाधारण की भाषा थी ।

2. बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रन्थ, गाथा सप्तशती, कुमारपाल चरित महाकाव्य आदि की रचना प्राकृत में ही हुई है ।

3. भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेलों ने प्राकृत में ही धर्मोपदेश दिए हैं ।

5. इस अंश में मूल चर्चा की गई है :

(क) भारतीयों की (ख) पुरुषों की शिक्षा की

(ग) स्त्री-शिक्षा की (घ) भारत के विद्वानों की

उत्तर–1. (घ) 2. (ग) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लेखक ने किस साक्ष्यों के द्वारा यह प्रमाणित किया है कि उस काल में जनसाधारण की भाषा प्राकृत था ?

उत्तर–लेखक ने निम्नलिखित साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित किया है कि उस काल की जनसाधारण की भाषा प्राकृत थी ।

1. बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रन्थ प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं ।

2. भगवान शाक्य मुनि और उनके शिष्यों ने धर्मोपदेश प्राकृत में ही दिए ।

3. बौद्धों का त्रिपिटक ग्रन्थ प्राकृत में रचा गया । यह हमारे महाभारत से भी बड़ा है ।

4. गाथा-सप्तशती, सेतुबंध महाकाव्य और कुमारपाल चरित्र आदि ग्रन्थ पंडितों ने प्राकृत में ही रचे हैं ।

2. लेखक ने नाटकों ने स्त्रियों के प्राकृत बोलने को उनके अपढ़ होने का प्रमाण क्यों नहीं माना?

उत्तर–लेखक ने नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने को उनके अपढ़ होने का प्रमाण नहीं माना क्योंकि तब स्त्रियाँ संस्कृत नहीं बोल सकती थी। संस्कृत न बोलना अपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। फिर नाटक जिस काल के हैं उस काल में जनसाधारण की प्रचलित भाषा संस्कृत नहीं थी,ाकृत के प्रचलन के पर्याप्त सबूत मिलते हैं।

3. स्त्रियों के लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूँट क्यों बताता है ?

उत्तर–सुशिक्षित स्त्रियों ने शास्त्रार्थ में पूजनीय महापुरुषों का मुकाबला कर उन्हें पराजित कर दिया। इसलिए पुरुष प्रधान समाज के लिए स्त्रियों का पढ़ाना विष का घूँट और पुरुषों का पढ़ना उनके लिए अमृतपान है। दूसरे शब्दों में लेखक उन पुरुषों पर व्यंग्य कर रहा है जो स्त्री-शिक्षा के विरोधी हैं। स्त्रियों ने शास्त्रार्थ में विद्वान माने जाने वाले पुरुषों को पराजित किया इसलिए उनके लिए स्त्रियों को पढ़ाना काल कूट है ऐसे लोग केवल पुरुषों की शिक्षा के समर्थक हैं ।

4. शिक्षा बहुत व्यापक शब्द कैसे है ?

उत्तर–शिक्षा के अन्तर्गत अनेक विषयों का समावेश हो सकता है । इसमें भाषा, अर्थशास्त्र, विज्ञान, समाजशास्त्र, इतिहास, धर्म नीति, राजनीतिशास्त्र आदि विषयों का अध्ययन किया जा सकता है। पढ़ना-लिखना भी उसी के अन्तर्गत आता है । इस प्रकार शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है।

5. ''निरक्षर स्त्री समाज की उन्नति में बाधा है ।'' इस विषय में अपना मत प्रकट कीजिए ।

उत्तर–किसी भी समाज में स्त्री और पुरुष दोनों का महत्व है। स्त्री के पढ़ने-लिखने से समाज की उन्नति

4. स्त्री शिक्षा के उल्लेख न मिलने का कारण हो सकता है :

(क) सभी उल्लेखों का नष्ट हो जाना (ख) इस संदर्भ में कुछ लिखा ही नहीं गया

(ग) स्त्रियों की शिक्षा की कोई प्रणाली ही नहीं बनी (घ) ये सभी कथन गलत है

5. वेदों की रचना की है :

(क) बड़े-बड़े पंडितों ने (ख) ऋषियों की कन्याओं ने

(ग) स्त्री-पुरुषों ने मिलकर (घ) ईश्वर

उत्तर–1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)

(द) शिक्षा बहुत व्यापक शब्द है । उसमें सीखने योग्य अनेक विषयों का समावेश हो सकता है । पढ़ना लिखना ही उसी के अंतर्गत है। इस देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं । इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों की ही शिक्षा प्रणाली कौन सी अच्छी है । प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना विचार है वह अभिमान उत्पादक है, वह गृह सुख का नाश करनेवाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है ।

1. किस शब्द का व्यापकता की बात की गई है :

(क) मान सम्मान (ख) धन

(ग) इंसान (घ) शिक्षा

2. यदि कोई शिक्षा प्रणाली स्त्रियों की शिक्षा अनर्थकारी बताए तो :

(क) सहर्ष स्वीकार करना चाहिए (ख) शिक्षा प्रणाली का स्वागत करना चाहिए

(ग) उस शिक्षा प्रणाली में संशोधन करना या करना चाहिए (घ) नियम बनाने वाले को मार देना चाहिए

3. इस अंश के पाठ का नाम है :

(क) स्त्री-शिक्षा का महत्व (ख) भारतीय नारी का महत्व

(ग) स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (घ) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों का खंडन

4. इस गद्यांश के पाठ के लेखक हैं :

(क) यतीन्द्र मिश्र (ख) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(ग) यशपाल (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

4. महाभारत से भी बड़ा ग्रन्थ कौन-सा है ?

(क) रामायण (ख) त्रिपिटिक

(ग) पृथ्वीराज रासो (घ) ऋग्वेद

5. बौद्धों और जैनों के जमाने में कौन-सी जनसाधारण की भाषा थी ?

(क) वैदिक संस्कृत (ख) लौकिक संस्कृत

(ग) अपभ्रंश (घ) प्राकृत

उत्तर–1. (घ) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)

(स) पुराने जमाने में स्त्रियों के लिए कोई विश्वविद्यालय न था। फिर नियमबद्ध प्रणाली का उल्लेख आदि पुराणों में न मिले तो क्या आश्चर्य। और, उल्लेख उसका कहीं रहा हो, पर नष्ट हो गया हो तो ? पुराने जमाने में विमान उड़ते थे। बताइए उनके बनाने की विधि बताने वाले कोई शास्त्र ! बड़े-बड़े जहाजों पर सवार होकर लोग द्वीपांतरों को जाते थे। दिखाइए जहाज बनाने की नियमबद्ध प्रणाली के दर्शक ग्रन्थ ! पुराणादि में विमानों और जहाजों द्वारा की गई यात्राओं के हवाले देखकर उनका अस्तित्व तो हम बड़े गर्व से स्वीकार कर लेते हैं परन्तु पुराने ग्रन्थों में अनेक प्रगल्भ पंडिताओं के नामोल्लेख देखकर भी कुछ लोग भारत की तत्कालीन स्त्रियों को मूर्ख अपढ़ और गँवार बताते हैं। इस शास्त्रज्ञाता और इस न्यायशीलता की बलिहारी ! वेदों को प्रायः सभी हिन्दू ईश्वरकृत मानते हैं। सो ईश्वर तो वेद-मंत्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से करावे और हम उन्हें ककहरा पढ़ाना भी पाप समझें ।

1. स्त्रियाँ पहले नहीं पढ़ाई जाती थीं :

(क) वे मूर्ख होती थी (ख) इसका उल्लेख पुरानों में नहीं मिलता

(ग) ईश्वर ने इन्हें घर के काम के लिए बनाया (घ) स्त्रियाँ बहुत आलसी होती है

2. प्राचीन काल में लोग विमानों का प्रयोग करते थे :

(क) इसकी तकनीक पाई जाती है (ख) विमानों के अवशेष मिले हैं

(ग) विमानों में यात्रा का वर्णन पुराणों में है (घ) विमान ही एक मात्र यात्रा के साधन थे

3. स्त्री-शिक्षा के विरोध में तर्क दिया गया है :

(क) उस समय सभी स्त्रियाँ केवल घरेलू काम करती थी

(ख) उस समय पुरुषों का पढ़ना ही मान्य था

(ग) उस काल की स्त्रियाँ मूर्ख होती थी

(घ) उस समय स्त्रियों के लिए विश्वविद्यालय नहीं थे

3. स्त्री शिक्षा के विरोधी लोग हैं :

(क) जो पढ़े-लिखे नहीं हैं (ख) जो स्त्रियों को दूसरे दर्जे का समझते हैं

(ग) जो शक्तिशाली एवं बलवान हैं (घ) जो सुशिक्षित लोग हैं

4. सुशिक्षित लोगों का पेशा है :

(क) सुमार्गियों को कुमार्गी बनाना (ख) अपने लिए धन कमाना

(ग) कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना (घ) समाज को मूर्ख बनाकर लाभ लेना

5. लेखक ने शोक की बात इसे मानी है

(क) जो लोग कॉलेज में पढ़े हैं

(ख) जो धर्म का उपदेश देते हैं

(ग) जो स्त्री शिक्षा का विरोध करते हैं

(घ) जो कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना चाहते हैं

उत्तर–1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)

(ब) इसका क्या सबूत है कि उस जमाने में बोलचाल की भाषा प्राकृत न थी ? सबूत तो प्राकृत के चलन के ही मिलते हैं । प्राकृत यदि उस समय की प्रचलित भाषा न होती तो बौद्धों तथा जैनों के हजारों ग्रन्थ उसमें क्या लिखे जाते और भगवान शाक्य मुनि तथा उनके चेले प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते । बौद्धों का 'त्रिपिटक ग्रन्थ' हमारे महाभारत से भी बड़ा है। उसकी रचना में की जाने का एकमात्र कारण यही है कि उस जमाने में प्राकृत ही सर्वसाधारण की भाषा थी । अतएव प्राकृत बोलना और लिखना अपढ़ और अशिक्षित होने का चिह्न नहीं ।

1. बौद्धों और जैनों के समय कौन-सी भाषा प्रचलित थी ?

(क) हिन्दी (ख) अपभ्रंश

(ग) वैदिक-साहित्य (घ) प्राकृत

2. बौद्धों जैनों ने कितने ग्रन्थों की रचना की ?

(क) दर्जनों (ख) सैकड़ों

(ग) हजारों (घ) लाखों

3. किसने प्राकृत में उपदेश किया था ?

(क) शाक्य मुनि (ख) विश्वामित्र

(ग) याज्ञवल्क्य (घ) गौतम ऋषि

7. लेखिका की साहित्य के प्रति रुचि जागृत होने का प्रमुख कारण क्या है ?

उत्तर–लेखिका की अध्यापिका शीला अग्रवाल के प्रोत्साहन व मार्गदर्शन में उन्होंने हिन्दी के प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों का अध्ययन किया। साथ ही वे अपनी अध्यापिका के साथ साहित्यिक चर्चाएँ भी करती रहीं ।

8. भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में लेखिका का क्या सक्रिय योगदान रहा ?

उत्तर–लेखिका स्थानीय स्तर पर धरने, प्रदर्शन, हड़ताल कराती व अंग्रेजी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करती व सार्वजनिक सभाओं में भाषण प्रस्तुत करती ।

9. लेखिका के पिता के क्रोधी व शक्की होने के क्या कारण थे ?

उत्तर–लेखिका के पिता महत्वाकांक्षी थे, उनमें नवाबी आदतें थी तथा वे सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा पाने व शीर्ष पर रहना चाहते थे। इस क्षेत्र में असफल रहने व आर्थिक रूप से पिछड़ने पर वे क्रोधी हो गए । साथ ही अपनों ही के द्वारा विश्वासघात किए जाने पर वे शक्की हो गए।

10. लेखिका के पिता उन्हें सामान्य लड़कियों से कैसे भिन्न बनाना चाहते थे ?

उत्तर–लेखिका के पिता चाहते थे कि उनकी बेटी सामान्य लड़कियों की तरह गृहस्थी के कार्यों में अपनी प्रतिभा धूमिल न कर रचनात्मक, सृजनात्मक कार्यों एवं सामाजिक, राजनैतिक आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी करें तथा जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी छवि स्थापित करें ।

15. स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन–महावीर प्रसाद द्विवेदी

निम्नलिखि गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर दीजिए :

(अ) बड़े शोक की बात है आजकल भी ऐसे लोग विद्यमान है जो स्त्रियों को पढ़ाना गृह सुख के नाश का कारण समझते हैं। और लोग भी ऐसे वैसे नहीं सुशिक्षित लोग–ऐसे लोग जिन्होंने बड़े-बड़े स्कूलों और शायद कॉलेजों में भी शिक्षा पाई है, जो धर्मशास्त्र और संस्कृत के ग्रन्थ साहित्य से परिचय रखते हैं और जिनका पेशा कुशिक्षितों को सुशिक्षित करना तथा कुमार्गगामियों को सुमार्गगामी बनाना और अधार्मिकों को धर्मतत्व समझाना है।

1. लेखक किन लोगों से वैचारिक टक्कर लेता है :

(क) अध्यापकों से (ख) स्त्री शिक्षा के विरोधियों से

(ग) अधार्मिक लोगों से (घ) संस्कृत के विद्वानों से

2. स्त्री-शिक्षा के विरोधी अपने समर्थन में क्या तर्क देते हैं ?

(क) गृह-सुख का नाश करना (ख) स्त्रियों के लिए विद्यालय खोलने होंगे

(ग) स्त्रियों के लिए यह पाप कर्म है (घ) स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक प्रभावशाली हो जाएंगी

उसमें पिता जी से पूछा था कि उस पर अनुशासनात्मक कार्यवाही क्यों न की जाए ? पिताजी को इसके लिए कॉलेज बुलाया था। पिताजी उस पत्र को पढ़कर आग-बबूला हो गए। उन्हें लगा कि उनके पाँच बच्चों में से लेखिका ने उनके नाम पर दाग लगा दिया है। लेखिका पर उबलते हुए कॉलेज पहुँचे । पिताजी के पीछे लेखिका पड़ोस में जाकर बैठ गई जिससे वह लौटने पर पिता के क्रोध से बच सके परन्तु जब वे कॉलेज से लौटे तो बहुत प्रसन्न थे, चेहरा गर्व से चमक रहा था। वे घर आकर बोले कि उसका कॉलेज की लड़कियों पर बहुत रौब है । पूरा कॉलेज तीन लड़कियों के इशारे पर खाली हो जाता है। प्रिंसिपल को कॉलेज चलाना असंभव हो रहा है। पिताजी को उस पर गर्व होने लगा कि वह देश की पुकार के समय देश के साथ चल रही है, इसलिए इसे रोकना असंभव था । यह सब सुनकर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हुआ न ही अपने कानों पर ।

3. लेखिका का पड़ोस कल्चर से क्या तात्पर्य है ? आधुनिक जीवन में पड़ोस कल्चर विच्छिन्न होने का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

उत्तर–पड़ोस कल्चर से लेखिका का तात्पर्य हे घर के आसपास रहने वालों की संस्कृति । आधुनिक जीवन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण महानगरों के फ्लैट में रहने वालों की संस्कृति ने परंपरागत पड़ोस कल्चर से बच्चों को अलग करके उन्हें अत्यधिक संकीर्ण, असहाय और असुरक्षित बना दिया है ।

4. माँ के धैर्य और सहनशक्ति को लेखिका ने धरती से भी ज्यादा क्यों बताया है ?

उत्तर–लेखिका ने माँ के धैर्य और सहनशक्ति को धरती से ज्यादा बताया है क्योंकि पृथ्वी की सहनशक्ति और धैर्य जब जवाब दे देते हैं तब वह भूकम्प बाढ़ आदि के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। लेकिन लेखिका की माँ पिताजी की प्रत्येक ज्यादती को चुपचाप सहन कर जाती थी और बच्चों की प्रत्येक उचित अनुचित फरमाइश और जिद को अपना कर्तव्य मानकर सहज भाव से स्वीकार कर लेती थी ।

5. लेखिका ने यह क्यों कहा कि पिताजी कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे ?

उत्तर–लेखिका के पिताजी में विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा थी, दूसरी ओर उनमें अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर भी सजगता थी। वे आधनिकता और परंपरा दोनों का निर्वाह करना चाहते थे । एक ओर लेखिका के जलसे-जुलूसों में नारे लगवाने-लगाने, हड़ताल करवाने और भाषण देने के विरुद्ध थे तो दूसरी ओर लेखिका के इन्हीं कार्यों पर गर्व से फूल उठते थे इसलिए लेखिका ने कहा कि पिताजी एक साथ कितनी तरह के अंतर्विरोधों में जीते थे ।

6. लेखिका मन्नु भंडारी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

उत्तर–लेखिका स्वतंत्र विचारों की पक्षधर थी जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया । वे साहसी व जुझारू व्यक्तित्व की धनी थीं ।

(द) पर यह सब तो मैंने केवल सुना । देखा तब तो इन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते पिता थे । एक बहुत बड़े आर्थिक झटके के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए थे, जहाँ उन्होंने अपने अकेले के बलबूते और हौसले से 'अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश' के अधूरे काम को बढ़ाना शुरू किया जो अपनी तरह का पहला और अकेला शब्दकोश था। इसने उन्हें यश और प्रतिष्ठा तो बहुत दी पर अर्थ नहीं और शायद गिरती आर्थिक स्थिति ने ही उनके व्यक्तित्व के सारे सकारात्मक पहलुओं को निचोड़ना शुरू कर दिया ।

1. लेखिका के पिता को इंदौर से अजमेर किस कारण आना पड़ा था ?

(क) राजनीतिक दबाव (ख) आर्थिक झटका

(ग) साहित्यिक अवहेलना (घ) पारिवारिक दुर्दशा

2. पिता का अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश किस आधार पर उचित था ?

(क) वर्णवार (ख) विषयवार

(ग) मुहावरादार (घ) मात्रावार

3. शब्दकोश की रचना से पिता को प्राप्त हुआ था ?

(क) अपार धन (ख) यश–प्रतिष्ठा

(ग) पुरस्कार (घ) राजकीय सम्मान

4. पिता का व्यक्तित्व हो गया था :

(क) निराशापूर्ण (ख) उदारवादी

(ग) नकारात्मक (घ) सकारात्मक

5. पिता ने शब्दकोश कैसे पूरा किया था ?

(क) अकेले (ख) सरकारी सहायता से

(ग) साहित्यिक संस्था के सहयोग से (घ) सहयोगी की सहायता से

उत्तर–1. (ख) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग) 5. (क)

लघुउत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

1. लेखिका ने अपने पिता को किन गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था ?

उत्तर–लेखिका ने अपने पिता को नाम, सम्मान, प्रतिष्ठा, समाज के काम, विद्यार्थियों को अपने घर में रखकर पढ़ाना, खुशहाल दरियादिल, कोमल और संवेदनशील होने के गुणों के भग्नावशेषों को ढोते देखा था।

2. वह कौन सी घटना थी जिसको सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर ?

उत्तर–लेखिका जिस कॉलेज में पढ़ती थी, उस कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र पिताजी के नाम आया था।

(स) पिताजी की जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी, आज एकाएक अपने खंडित विश्वासों के व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है। बहुत 'अपनों' के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक ! होश संभालने के बाद से ही जिन पिता जी से किसी न किसी बात पर हमेशा मेरी टक्कर ही चलती रही, वे तो न जाने कितने रूपों में मुझमें हैं कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में । केवल बाहरी भिन्नता के आधार पर अपनी परंपरा और पीढ़ियों को नकारने वालों को क्या सचमुच इस बात का बिल्कुल अहसास नहीं होता कि उनका आसन्न अतीत किस कदर उनके भीतर जड़ जमाए बैठा रहता है । समय का प्रवाह भले ही हमें दूसरी दिशाओं में बहाकर ले जाए । स्थितियों का दबाव भले ही हमारा रूप बदल दे, हमें पूरी तरह उससे मुक्त तो नहीं ही कर सकता ।

1. लेखिका के व्यवहार में पिता के किस व्यवहार की झलक दिखाई देती थी ?

(क) अविश्वासी (ख) दयालु

(ग) सहयोगी (घ) शक्की

2. पिता का कौन-सा व्यवहार लेखिका के व्यवहार में शामिल नहीं है ?

(क) कुंठा (ख) शांत स्वभाव

(ग) शक करना (घ) क्रोध करना

3. वह कौन-सी बात है जिससे हम कभी मुक्त नहीं हो पाते ?

(क) अपनी ईमानदारी से (ख) अपने निष्ठा भाव से

(ग) समाज व राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यों से

(घ) हमारे आसन्न अतीत से जो हमारे भीतर जड़ें जमाए बैठा हो

4. लेखिका का टकराव अवसर किससे होता था ?

(क) सहपाठियों से (ख) भाई-बहनों से

(ग) पिता से (घ) पड़ोसियों से

5. पिताजी के जिस शक्की स्वभाव पर मैं कभी भन्ना-भन्ना जाती थी यहाँ भन्ना-भन्ना जाती का आशय है :

(क) क्रोधित होना (ख) शोर करना

(ग) गुमसुम होना (घ) मौन होना

उत्तर–1. (घ) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)

4. लेखिका के लिए उनकी माँ की त्याग भावना आदर्श क्यों नहीं बन सकी ?

(क) पिता के व्यवहार के कारण

(ख) विवशता में किए जाने के कारण

(ग) ईर्ष्या के कारण

(घ) अतीत में घटी घटनाओं की प्रतिक्रिया के कारण

5. 'हम भाई-बहनों का सारा लगाव माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका' यह किस प्रकार का वाक्य है ?

(क) मिश्र (ख) संयुक्त

(ग) साधारण (घ) सरल

उत्तर–1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ख)

(ब) सिकुड़ती आर्थिक स्थिति के कारण और अधिक विस्फारित उनका अहं उन्हें इस बात तक की अनुमति नहीं देता था कि वे कम से कम अपने बच्चों को तो अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार बनाएँ । नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकांक्षाएँ, हमेशा शीर्ष पर रहने के बाद हाशिए पर सरकते चले जाने की यातना क्रोध बनकर हमेशा माँ को कँपाती-थरथराती रहती थी। अपनों के हाथों विश्वासघात की जाने कैसी गहरी चोटें होंगी वे जिन्होंने आँख मूँदकर सबका विश्वास करने वाले पिता के बाद के दिनों में इतना शक्की बना दिया था कि जब तब हम लाग भी उसकी चपेट में आते ही रहते ।

1. 'सिकुड़ती आर्थि स्थिति' का आशय है :

(क) धन-संपत्ति अपने पास आना (ख) दीन-हीन हो जाना

(ग) आर्थिक रूप से कमजोर होना (घ) (क) एवं (ख) दोनों

2. लेखिका के पिता के क्रोध का शिकार सर्वाधिक कौन होता था ?

(क) लेखिका के भाई-बहन और माँ (ख) लेखिका की माँ

(ग) स्वयं लेखिका (घ) परिवार के सभी सदस्य

3. लेखिका के पिता का स्वभाव कैसा नहीं था ?

(क) अहंकारी (ख) महत्वाकांक्षी

(ग) क्रोधी (घ) शांत व सौम्य

4. पिता के साथ ऐसा क्या घटित हुआ कि वे अपनों पर ही शक करने लगे :

(क) तिरस्कार (ख) विश्वासघात

(ग) छल (घ) (क) एवं (ग)

उत्तर–1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ख)

1. वह पुस्तक खरीदने के लिए दुकान पर गया ।

2. वह बाजार गया और फल खरीदकर लाया ।

3. उस बालक को बुलाओ, जिसने गिलास तोड़ा है ।

4. गीता नृत्य कर रही है ।

5. गुरुजी ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी ।

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

1. माता जी ने आटा गूँथकर रोटी बनाई । (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

2. अचानक पुलिस आ गयी और गली में सन्नाटा छा गया । (सरल वाक्य में बदलिए)

3. सूरज ने कपड़े पहने, पर वह संतुष्ट नहीं है । (मिश्र वाक्य में बदलिए)

14. एक कहानी यह भी–मन्नू भण्डारी

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(अ) पिता के ठीक विपरीत थीं हमारी बेपढ़ी-लिखी माँ । धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्य और सहनशील थी शायद उनमें। पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी वे। उन्होंने जिन्दगी भर अपनेलिए कुछ माँगा नहीं, चाहा नहीं केवल दिया ही दिया। हम भाई बहनों का सारा लगाव (शायद सहानुभूति से उपजा) माँ के साथ था लेकिन निहायत असहाय मजबूरी में लिपटा उनका यह त्याग कभी मेरा आदर्श नहीं बन सका. ..... न उनका त्याग, न उनकी सहिष्णुता ।

1. कौन-सी विशेषता माँ की नहीं है ?

(क) बेपढ़ा-लिखा होना (ख) सबकी सेवा करना

(ग) आवेश और क्रोध (घ) धैर्य और सहनशीलता

2. कैसे कहा जा सकता है कि लेखिका की माँ ने धरती से अधिक सहनशक्ति थी ?

(क) पिता की ज्यादतियाँ और बच्चों की फरमाइशें मानती थीं ।

(ख) उन्होंने पारिवारिक दायित्वों को निभाया था ।

(ग) अपने शान्त स्वभाव के कारण सहनशील थी ।

(घ) धनाभाव की कठिनाइयों ने उन्हें सहनशील बना दिया था

3. माँ ने किसे क्या नहीं दिया ?

(क) संसार का लगाव (ख) अपनों को सहानुभूति

(ग) परिवार को प्यार (घ) अपने आपको सुख सुविधा

13. वाक्य का सही अर्थ तभी निकलता है जब अंश एक समुचित समय सीमा में ही बोले जाएँ । इस शर्त को कहते हैं :

(क) योग्यता (ख) संविधि

(ग) आकांक्षा (घ) पदक्रम

14. वाकय के प्रमुख घटक हैं :

(क) चार (ख) तीन

(ग) पाँच (घ) इनमें से कोई नहीं

15. वे वहाँ जाकर भाषण देंगे–इसका संयुक्त वाक्या में स्थानान्तरण होगा :

(क) वे वहाँ जाएँगे और भाषण देंगे (ख) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगेंगे

(ग) यहाँ से वहाँ जाकर भाषण देंगे (घ) वे वहाँ जाएँगे या भाषण देंगे

16. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ साधारण वाक्य, कुछ मिश्रित वाक्य और कुछ संयुक्त वाक्य हैं । सामने कोष्ठकों में उनके ठीक-ठीक नाम लिखिए।

1. जो विद्यान होता है, उसे सभी आदर करते हैं ।
2. मैं चाहता हूँ कि तुम परिश्रम करो ।
3. वह आदमी पागल हो गया है ।
4. जब राजा नगर में आया, तब उत्सव मनाया गया ।
5. अपना काम देखो या शांत बैठे रहो ।
6. जो पत्र मिला है, उसे शीला ने लिखा होगा ।
7. आस्ट्रेलिया से आए हुए खिलाड़ियों को प्रथम तल पर ठहराया गया है ।
8. मैं उसके पास जा रहा हूँ ताकि कुछ योजना बन सके ।
9. आपकी वह कुर्सी कहाँ है, जो आप कलकत्ता से लाए थे ।
10. हमारे मित्र कल यहाँ से जाएँगे ओर आगरा पहुँच कर ताजमहल देखेंगे ।

उत्तर संकेत–(1) ग, (2) घ, (3) घ, (4) ख, (5) ख, (6) ख, (7) ग, (8) क, (9) घ, (10) क, (11) ग, (12) क, (13) ख, (14) घ (दो) (15) क (16) (1) मिश्र वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) सरल वाक्य (4) मिश्र वाक्य (5) संयुक्त वाक्य (6) मिश्र वाक्य (7) साधारण वाक्य (8) मिश्र वाक्य (9) मिश्र वाक्य (10) संयुक्त वाक्य

अभ्यास प्रश्न :

1. रचना के आधार पर वाक्य का सही प्रकार लिखिए :

4. सरल वाक्य में नहीं होता :

(क) एक मुख्य क्रिया (ख) एक कर्ता

(ग) एक विधेय (घ) एक या एक से अधिक कर्ता

5. रचना की दृष्टि से वाक्य भेद है :

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पाँच

6. समानाधिकरण उपवाक्य होते हैं :

(क) सरल वाक्य में (ख) संयुक्त वाक्य में

(ग) जटिल वाक्य में (घ) इनमें से कोई नहीं

7. एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं :

(क) संयुक्त वाक्य में (ख) विशेषण वाक्य में

(ग) मिश्र वाक्य में (घ) लघु वाक्य में

8. स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य होता है :

(क) सरल वाक्य (ख) संज्ञा उपवाक्य

(ग) जटिल वाक्य (घ) विशेषण उपवाक्य

9. रेखा ज्योंहि घर पहुँची वर्षा शुरू हो गई ।

(क) संज्ञा आश्रित वाक्य (ख) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(ग) समानधिकरण उपवाक्य (घ) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

10. मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए फल नहीं खाया । यह नचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार है :

(क) जटिल वाक्य (ख) संकेतवाचक वाक्य

(ग) साधारण वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

11. कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कलकत्ता । रचना की दृष्टि से वाक्य है :

(क) मिश्र वाक्य (ख) सरल वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) इनमें से कोई नहीं

12. कालवायी क्रिया-विशेषण (आश्रित) उपवाक्य किस वाक्य में है :

(क) जब आपका आदमी आया, मैं नहा रहा था (ख) जैसा वह गाती है, कोई नहीं गा सकता।

(ग) तुम जितना जानते हो, उतना काम करो (घ) यदि मेरी बात मानोगे तो सुखी रहोगी

(घ) परिमाणवाचक उपवाक्य

1. जितना तुम पढ़ोगे, उतना समझ आएगा ।
2. वह उतना ही अधिक थकेगा, जितना अधिक दौड़ेगा ।
3. जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे आवश्यकताएँ बढ़ती जाती है ।

(ङ) परिणाम (कार्य-कारण) वाची उपवाक्य :

1. वह आएगा जरूर क्योंकि उसको नौकरी की जरूरत है ।
2. यदि वह आएगा तो काम बन जाएगा ।
3. यद्यपि तू पहलवान है, तथापि (फिर भी) मुझसे नहीं जीत सकता ।

वाक्य रूपान्तरण :

1. सरल वाक्य–मोहन हिन्दी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया है ।
   संयुक्त वाक्य–मोहन को हिन्दी पढ़ना है और वह शास्त्री जी के यहाँ गया है ।
   संयुक्त वाक्य–मोहन को हिन्दी पढ़ना है अतः वह शास्त्री जी के यहाँ गया है ।
   मिश्र वाक्य–मोहन शास्त्री जी के यहाँ गया है, क्यों उसे हिन्दी पढ़ना है ।
2. सरल वाक्य–मोहन बहुत खिलाड़ी होने पर भी कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।
   संयुक्त वाक्य–मोहन बहुत खिलाड़ी है, किन्तु कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।
   मिश्र वाक्य–यद्यपि मोहन बहुत खिलाड़ी है फिर भी कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता ।
3. सरल वाक्य–गड्ढा खोदकर मजदूर चले गए ।
   संयुक्त वाक्य–जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया, तब चले गए ।
   मिश्र वाक्य–मजदूरों ने गड्ढा खोदा और चले गए ।

प्रश्न :

1. सीमा यहाँ आई और रेखा बाहर गई । रचना के आधार पर सही वाक्य भेद है ।
   (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
   (ग) संयुक्त वाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य
2. उद्देश्य में सम्मिलित नहीं है :
   (क) कर्ता का विस्तार (ख) कर्ता
   (ग) जिसके बारे में कहा जाए (घ) कर्म का विस्तार
3. विधेय के अंतर्गत नहीं आता :
   (क) पूरक (ख) कर्म
   (ग) क्रिया का विस्तार (घ) जिसके बारे में कहा जाए

2. जान पड़ता है कि पिताजी कुछ बीमार हैं । ('जान पड़ता है'–क्रिया का उद्देश्य)

3. इनसे पूछिए कि ये कौन हैं ? ('यह' का पूरक)

4. मुझे विश्वास हे कि आज अवश्य आएँगे । (विश्वास का समानाधिकरण)

यहाँ रेखांकित उपवाक्य संज्ञा (आश्रित) उपवाक्य है, शेष प्रधान उपवाक्य है ।

(ख) **विशेषण उपवाक्य**–मुख्य (प्रधान) उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला उपवाक्य विशेषण उपवाक्य कहलाता है ।

जैसे–1. जो दूसरों की निन्दा करते हैं, वे लोग अच्छे नहीं होते ।

2. वह किताब कहाँ है, जो आप कल लाए थे ।

3. यह वही बालक है, जिसे मैंने कल शहर में देखा था ।

पहचान–मुख्य उपवाक्य पर 'कौन' 'किसे' 'किन्हें' प्रश्न करने पर जो उत्तर आता है, वही विशेषण उपवाक्य होता है। अथवा वाक्य के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कहीं भी आ सकता है।

यह प्राय: 'जो' या इसके किसी रूप (जिसे, जिसने, जिसका, जिन्हें, जिनके लिए आदि) से आरम्भ होता है । अथवा वाक्य के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कहीं भी आ सकता है।

(ग) **क्रिया-विशेषण उपवाक्य**–मुख्य (प्रधान) उपवाक्य की क्रिया के संबंध में किसी प्रकार की सूचना देने वाला उपवाक्य क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहलाता है। जैसे–

1. तुम वहाँ चले जाओ, जहाँ बस खड़ी है ।

2. जहाँ-जहाँ हम गए, हमारा स्वागत हुआ ।

क्रिया-विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं–

(क) कालवाचक उपवाक्य

1. ज्योंहि मैं स्टेशन पहुँचा, गाड़ी ने सीटी बजा दी ।

2. जब मैं घर पहुँचा तो वर्षा हो रही थी ।

(ख) स्थानवाचक उपवाक्य

1. जहाँ तुम पढ़ते थे, मेरा भाई भी वहीं पढ़ता था ।

2. तुम जिधर जा रहे हो, उधर आगे रास्ता बंद है ।

3. वहाँ इस वर्ष अकाल पड़ सकता है, जहाँ वर्षा नहीं हुई ।

(ग) रीतिवाचक उपवाक्य

1. आपको वैसा ही करना है, जैसा मैं कहता हूँ ।

2. वह उसी तरह खेलेगा, जैसा उसने सीखा है ।

(ख) **संकेत सूचक**–जो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें संकेतसूचक कहते हैं । जैसे–यदि....तो, जा....तो, यद्यपि-तथापि, यद्यपि.....परन्तु आदि ।

(ग) **उद्देश्य सूचक**–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्य सूचक कहलाते हैं। जैसे–इसलिए कि, ताकि, जिससे कि आदि ।

(घ) **स्वरूप सूचक**–मुख्य उपवाक्य का अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं। जैसे–यानी, मानो, कि, अर्थात् आदि ।

प्रधान व आश्रित उपवाक्य की पहचान–

1. प्रधान उपवाक्य वह होता है, जिसकी क्रिया मुख्य होती है ।

2. मिश्र वाक्य की मुख्य क्रिया जानने के लिए मिश्र वाक्य को एक सरल वाक्य में रूपांतरित करते हैं । जो क्रिया रूपांतरित होने वाली क्रिया होगी वही मुख्य क्रिया होगी । मुख्य क्रिया वाला यह उपवाक्य प्रधान उपवाक्य होगा ।

रूपांतरिक होने वाली क्रिया वाला उपवाक्य आश्रित होगा । जैसे–

'तुम परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते ।'

सरल वाक्य में रूपान्तरण–तुम परिश्रम करने पर अवश्य सफल होते । स्पष्ट है–यहाँ 'परिश्रम करते' क्रिया और वाक्यांत में ही है, अत: प्रधान उपवाक्य है। 'अवश्य सफल होते ।'

मिश्र उपवाक्य में आनेवाले आश्रित उपवाक्य के भेद–ये आश्रित (गौण) उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(क) संज्ञा उपवाक्य

(ख) विशेषण उपवाक्य

(ग) क्रिया-विशेषण उपवाक्य

(क) **संज्ञा उपवाक्य**–प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर आनेवाला उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य कहलाता है ।

जैसे–गुरुजी ने कहा कि आज पुस्तक पढ़ाएँगे ।

पहचान–यहाँ 'आज पुस्तक पढ़ाएँगे ।' उपवाक्य 'गुरुजी ने कहा' उपवाक्य के कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ है। सामान्यत: मुख्य उपवाक्य पर क्या प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वही संज्ञा उपवाक्य होता है ।

उक्त वाक्य में–गुरुजी ने क्या कहा है ? उत्तर मिलेगा–'आज पुस्तक पढ़ाएँगे' यही संज्ञा उपवाक्य हैं । ये प्राय: कि से आरम्भ करते हैं ।

संज्ञा उपवाक्य के अन्य उदाहरण :

1. सचिन बोला कि <u>मैं मुंबई जा रहा हूँ</u> । ('बोला' क्रिया का कर्म)

2. इन उपवाक्यों का स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग हो सकता है ।

नोट–जिन समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों, पदों और वाक्यों को परस्पर जोड़ा जाता है । उन्हें समानाधिकार समुच्चबोधक कहते हैं ।

जैसे–सुनन्दा खड़ी थी और अलका बैठी थी ।

इस वाक्य में 'और' समुच्चयबोधक शब्द द्वारा दो समान वाक्य परस्पर जुड़े हैं ।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक के भेद–समानाधिकरण समुच्चबोधक चार प्रकार के होते हैं ।

(क) **संयोजक**–जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं । जैसे–और, तथा, एवं व आदि संयोजक शब्द हैं ।

(ख) **विभाजक**–शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करनेवाले शब्द विभाजक या विकल्पक कहलाते हैं। जैसे–या, चाहे अथवा, अन्यथा आदि ।

(ग) **विरोधसूचक**–दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं। जैसे–परन्तु, पर, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि ।

(घ) **परिणामसूचक**–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर परिणाम को दर्शाने वाले शब्द परिणामसूचक कहलाते हैं । जैसे–फलतः, परिणामस्वरूप, इसलिए, अतः, अतएव, फलस्वरूप, अन्यथा आदि ।

3. **मिश्र वाक्य**–मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र (प्रधान) होता है। और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। मिश्र वाक्य के उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं । जैसे–मैंने देखा कि बाजार में चहल-पहल है ।

इस वाक्य में उपवाक्य हैं–मैंने देखा, बाजार में चहल-पहल थी। ये दोनों उपवाक्य 'कि' व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं । इनमें–

मुख्य या प्रधान उपवाक्य है–मैंने देखा ।

आश्रित उपवाक्य है–बाजार में चहल-पहल है ।

(मिश्र वाकय के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जब, जहाँ, जिसने, ज्योंहि-त्योंहि, जिधर-उधर, जैसे-वैसे, जितना-उतना, क्योंकि, यदि-तो, ताकि, यद्यपि-तथापि, अर्थात् मानो आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं ।)

नोट–किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोध क कहलाते हैं ।

व्यधिकरण समुच्चबोधक के भेद–व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद होते हैं–

(क) **कारणसूचक**–दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को कारण सूचक कहते हैं । जैसे–कि, क्योंकि, इसलिए, चूँकि, ताकि आदि ।

इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं–विशेषण, क्रिया-विशेषण, कारक आदि इन्हें ऐच्छिक घटक कहा जाता है ।

1. उद्देश्य 2. विधेय ।

1. उद्देश्य–जिसके विषय में कुछ कहा जाए । (1. कर्ता 2. कर्म का विस्तार)

2. विधेय–उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाय । (1. क्रिया 2. क्रिया का पूरक 3. कर्म/पूरक 4. कर्म/पूरक का विस्तार 5. अन्य कारकीय पद और उनका विस्तार)

उद्देश्य और विधेय को इस प्रकार समझा जा सकता है ।

इस समय रवि की माँ धारदार चाकू से पके-पके फल काट रही है ।

रचना की दृष्टि से वाक्य भेद–रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं–

1. सरल या साधारण वाक्य

2. संयुक्त वाक्य

3. मिश्र या जटिल वाक्य

1. **सरल या साधारण वाक्य**–इसमें एक या एक से अधिक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं । जैसे–

1. वह जोर-जोर से रोया ।

2. मैं और मेरा भाई दिल्ली जाएँगे ।

3. वे हर दिन दूध पीते हैं ।

4. मोहन घर जा रहा होगा ।

5. वह अत्याचार किए जा रहा था ।

6. पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद फैलाए जा रहा है ।

उक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ मुख्य क्रियाएँ हैं ।

ध्यान दें–स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होनेवाला उपवाक्य भी सरल वाक्य होता है ।

2. संयुक्त वाक्य–दो या दो से अधिक समाज स्तरीय (समानाधिकरण) उपवाक्य किसी समानाधिकार समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं, से संयुक्त वाक्य कहलाते हैं । जैसे–

1. हमलोग पुणे घूमने गए और वहाँ चार दिन रहे ।

2. यहाँ आप रह सकते हैं या आपका भाई रह सकता है ।

3. वे बीमार हैं, अतः आने में असमर्थ हैं ।

ध्यान दें–1. समानाधिकार उपवाक्य आश्रित न होकर एक-दूसरे के पूरक होते हैं ।

उत्तर–पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन कर्ताकारक, 'बैठा रहता है' क्रिया विशेष्य ।

6. मनोहर दसवीं कक्षा में पढ़ता है ।

उत्तर–विशेष्य, संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'कक्षा' विशेष्य ।

अभ्यास-प्रश्न :

प्रश्न–वाक्यों में रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए–

1. तोता पिंजरे में बैठकर आम खा रहा है ।
2. छोटी बच्ची हँस रही है ।
3. भारत अनेक संस्कृतियों वाला देश है ।
4. वह प्रत्येक बच्चे को पहचानता है ।
5. कविता सुन्दर है ।

वाक्य-भेद

मनुष्य के विचारों की पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह, जो व्यवस्थित हो, वाक्य कहलाता है । वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है ।

वाक्य में आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति का होना आवश्यक है ।

आकांक्षा–वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने की जो स्वाभाविक उत्कण्ठा जागती है, उसे आकांक्षा कहते हैं । जैसे–दिन में काम करते हैं ।

इस वाक्य को सुनकर हम प्रश्न करते हैं–कौन लोग काम करते हैं ? यदि हम कहें कि 'दिन में सभी काम करते हैं, तो 'सभी' कह देने से प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। और वाक्य ठीक हो जाता है । अत: इस वाक्य में 'सभी' शब्द की आकांक्षा थी जिसकी पूर्ति से वाक्य पूरा हो गया।

योग्यता–योग्यता से तात्पर्य है–पदों के अर्थबोधन की सामर्थ्य । जैसे–किसान लाठी से खेत जोतता है ।

उस वाक्य में 'लाठी' के स्थान पर 'हल' का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि 'हल' खेत जोतने के प्रसंग में अर्थबोधन की क्षमता रखता है ।

संनिधि (आसक्ति)–वाक्य के शब्दों को बोलने या लिखने में निकटता होना आवश्यक है । रूक-रूक कर बोले गए शब्द या लिखते समय ठहराव दिखाने के लिए विराम चिह्नों का प्रयोग न करने से अर्थ में बाधा पड़ती है। इस प्रकार अर्थ तभी निकलता है जब अंश समुचित समय-सीमा में ही बोले जाएँ। इस शर्त को संनिधि कहते हैं ।

वाक्य के घटक–

वाक्य के मूल और अनिवार्य घटक हैं–1. कर्ता 2. क्रिया

समुच्चय बोधक अव्यय–इसके दो भेद होते हैं–समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय, व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय । यह जिन शब्दों/पदों वाक्यों को मिला रहा है, उनका उल्लेख करना ।

संबंधबोधक अव्यय–जिन संज्ञा या सर्वनामों में संबंध बताया जा रहा है, उसका उल्लेख करना ।

विस्मयादिबोधक अव्यय–जो भाव प्रकट हो रहा है, उसका उल्लेख करना ।

उदाहरणस्वरूप कुछ पदों का परिचय दिया जा रहा है ।

(क) मैं कल बीमार था, इसलिए विद्यालय नहीं आया ।

मैं–सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, था और 'आया' क्रिया का कर्ता ।

विद्यालय–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'आया' क्रिया का अधिकारण ।

(ख) यह घड़ी मेरे बड़े भाई ने दी है ।

यह–विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'घड़ी' विशेष्य ।

बड़े–विशेषण, गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'भाई' विशेष्य ।

(ग) नितिन दसवीं कक्षा में पढ़ता है ।

कक्षा–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक 'पढ़ता' है । क्रिया का अधिकरण (स्थान) ।

(घ) बच्चों ने अपना काम कर लिया था ।

बच्चों ने–संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ताकारक, 'कर लिया था' क्रिया का कर्ता ।

कर लिया था–क्रिया, सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग बहुवचन, 'कर-धातु, भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्तृरि प्रयोग ।

रेखांकित पदों के पद परिचय दीजिए :

1. मीरा घर में रहती है ।

   उत्तर–व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक, 'रहती है' क्रिया का कर्ता ।

2. यह किताब मेरी है ।

   उत्तर–विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग ।

3. मैं धीरे-धीरे चलता हूँ ।

   उत्तर–क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'चलता हूँ' विशेष्य ।

4. मैं उसे आगरा में मिलूँगा ।

   उत्तर–व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'मिलूँगा' क्रिया का अधिकरण (स्थान)।

5. वह कक्षा में बैठा रहता है ।

संकलित परीक्षा-2 (FA-3+ FA-4) के लिए सहायक सामग्री
FA-3

3 पद-परिचय

शब्द और पद में अंतर–'शब्द' भाषा की स्वतन्त्र इकाई है । जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है, तो पद कहलाता है ।

जैसे–'लड़का' एक स्वतंत्र शब्द है ।

लड़का घर जाता है ।

पद-परिचय

वाक्य में प्रयुक्त पदों का विस्तृत व्याकरणिक परिचय देना । 'पद-परिचय' कहलाता है ।

जैसे–लड़का घर जाता है ।

'लड़का' पद काव्याकरणिक परिचय–जातिवाचक, संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'जाता है' क्रिया का कर्ता ।

पद-परिचय के लिए सभी शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक आदि की जानकारी होनी आवश्यक है ।

पद-परिचय देते समय जिन बातों की जानकारी होनी आवश्यक है, वे हैं–

संज्ञा–संज्ञा के तीन भेद हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा । लिंग–पुल्लिंग, स्त्रीलिंग ।

वचन–एकवचन या बहुवचन । कारक–कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान।

सर्वनाम–सर्वनाम के छः भेद होते हैं–पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम । इनका लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ बताना ।

सार्वनामिक विशेषण । लिंग, वचन, विशेष्य जिसकी विशेषता बता रहे हैं ।

क्रिया–क्रिया के दो भेद होते हैं । अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया । लिंग, वचन, धातु काल, वाच्य, प्रयोग आदि मीना

क्रिया-विशेषण-क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं । कालवाचक क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, परिणामवाचक क्रिया विशेषण तथा उस क्रिया का उल्लेख करना जिसकी विशेषता बता रहा है ।

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ सं०
1.	पद परिचय	3-6
2.	वाक्य भेद	6-14
3.	एक कहानी यह भी–मनु भंडारी	14-19
4.	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	19-25
5.	पद–तुलसीदास	25-30
6.	छाया मत छूना–गिरिजा कुमार माथुर	30-32
7.	साना–साना हाथ जोड़ी मधु कांकरिया	32-34
8.	वाच्य	34-38
9.	रस	38-40
10.	नौबत खाने में इबादत–याविन्द्र मिश्र	41-46
11.	संस्कृति–मदन्त आनन्द कौस्यायन	46-51
12.	कन्यादान–ऋतु राज	51-53
13.	संगतकार–मंगलेश डबराल	53-55
14.	एही ठैयां झुलनी हेरानी हो राम–शिव प्रसाद मिश्र	55-57
15.	मैं क्यों लिखता हूँ–अज्ञेय	58-61
16.	निबन्ध	61-63
17.	पत्र	64-69
18.	सार लेखन	69-73
19.	एफ० ए०-4 के लिए क्रिया कलाप	73-75
20.	आदर्श प्रश्न-पत्र	75-84

PREFACE

Kendriya Vidyalaya Sangathan is a pioneer organization. which caters to the all round development of the students. Time to time various strategies have been adopted to adorn the students with academic excellence.

This support material is one such effort by Kendriya Vidyalaya Sangathan, an empirical endeavor to help students learn more effectively and efficiently. It is designed to give proper platform to students for better practice and understanding of the chapters. This can suitably be used during revision. Ample opportunity has been provided to students through master cards and question banks to expose them to the CBSE pattern. It is also suggested to students to keep in consideration the time-management aspect as well.

I extend my heartiest gratitude to the Kendriya Vidyalay. Sangathan authorities for providing the support material to the students prepared by various Regions. The same has been reviewed by the Regional Subject Committee of Patna Region who have worked arduously to bring out the best for the students. I also convey my regards to the staff of Regional Office, Patna for their geniune cooperation.

In the end, earnestly hope that this material will not only improve the academic result of the students but also inculcate learning habit in them.

M. S. Chauhan

Deputy Commissioner

KENDRIYA VIDYALAYA
SANGATHAN
Patna Region

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

STUDY MATERIAL
2014-15
SA-II

CLASS X
HINDI